टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

फरवरी १९६६



७० पैसे



पराग

फरवरी १९६६

२६वां अंक

वार्षिक शुल्क:
स्थानीय रु. ४.८०.
डाक से रु. ५.००





पराग

फरवरी १९६६

२६वां अंक

वार्षिक शुल्क :
स्थानीय रु. ४.००,
डाक से रु. ५.००



अतापता

मुखपृष्ठका चित्र—

मजेदार कहानियां—

सरस कविताएं—

मनोहर कार्टून-कथा—

धारावाहिक उपन्यास—

अन्य रोचक सामग्री —

स्थायी स्तंभ—



पिटाई

बच्चो, तुमने 'टैंक' का नाम तो सुना होगा। 'टैंक' का ध्यान आते ही तुम्हारे सामने एक ऐसी मोटर गाड़ीकी तस्वीर खिंच जाती होगी, जो चारों तरफसे लोहेकी चादरोंसे ढकी हुई होती है। इसे 'बख्तरबंद' गाड़ी भी कहते हैं। इसके पहिए लोहेकी मोटी 'चेन' के भीतर चलते हैं। क्या तुम जानते हो, इस बख्तरबंद गाड़ीका सबसे पहले किसने निर्माण किया था? १५०० ईस्वीमें इटालवी चित्रकार लियोनार्दो दा विंसीने इस प्रकारकी एक गाड़ीकी रचना की, जिसके अंदर आठ आदमी बैठ सकते थे। चार पहियोंसे यह चला करती थी। इस गाड़ीके बनानेका मुख्य उद्देश्य था कि वे दुश्मनोंकी गोलियोंका निशाना न बन सकें। इसी लिए इस गाड़ीपर चारों तरफसे लोहेकी मोटी चादर लगा दी गई थी। सुरक्षा के लिए एक तोप भी इसपर लगाई गई। यह तोप चारों तरफ घूम जाती है और अंदर छिपे बैठे बंदूकची सामनेसे आती हुई दुश्मनकी फौज पर धुआंधार गोलाबारी कर सकते हैं।

ज्यों ज्यों समय बीतता गया, इसके रूप और आकारमें भी फेर-बदल होती गई। पहले यह छह-सात टनकी ही होती थी। इसकी रफ्तार भी आठ-नौ मील प्रति घंटा ही थी। लेकिन समयके साथ साथ इसमें परिवर्तन होते गए और अब ऐसी गाड़ियां बन गई हैं, जो साठ-सत्तर टन वजनकी होती हैं। तीस-पेंतीस मील प्रति घंटे की रफ्तारसे ऊंची-नीची, पानी वाली खाई, खड्डे, टेढ़ीमेढ़ी—सभी तरहकी जमीनपर चल सकती हैं। बड़ेसे बड़ा पत्थर छोटी चट्टानें, भारी-भरकम पेड़—इसके सामने कोई भी नहीं टिक सकता। एक टक्करमें सब धराशायी हो जाते हैं। और अब इसे बख्तरबंद गाड़ी नहीं, 'टैंक' नामसे पुकारा जाता है।

यह तो तुम जानते ही हो कि पहले लड़ाइयां रथों, घोड़ों, ऊंटों, हाथियों और पैदल सेनामें हुआ करती थीं। तीर, भाले, बर्छे ही हथियार हुआ करते थे। लेकिन अब लड़ाई बंदूकों, बमों, गोलों, तोपों, स्टेनगनों, ब्रेनगनों, मशीनगनों की है। इसलिए उसीके अनुसार ऐसी गाड़ियोंकी रचना की गई है, जो इसमें काम आती हैं।

•

पिछले साल अगस्त-सितंबरके महीनेमें पाकिस्तानने भारतपर आक्रमण किया था। पाकिस्तान को अमरीकाने पैटन टैंक तथा सेबर जेट हवाई जहाज दिए थे। ये दोनों चीजें आजके युगमें अत्याधुनिक तथा सबसे खतरनाक मानी जाती हैं। पाकिस्तानको उम्मीद थी कि भारतवर्षके पास न तो ऐसे टैंक हैं और न ही ऐसे लड़ाकू



राजकरन वैद्य, सुजानगढ़ :

ऐसी कौनसी चीज है, जो थोड़ी होनेपर भी बहुत होती है?

बेवकूफी!

जयपाल शर्मा, सामना (पटियाला) :

लोग काले आदमीसे घृणा करते हैं, काले धनसे नहीं। ऐसा क्यों?

क्योंकि उसका ऊपरका रंग काफी गोरा होता है!

शेख आर० जे०, अहमदनगर :

मैं मां-बापकी सेवा करने वाला श्रवणकुमार बनूं या वतनपर मर मिटने वाला भगतसिंह?

तुम सही अर्थोंमें शेख ही बनो!

कु० वीना दाते, नई दिल्ली :

काले बादलोंसे काला पानी क्यों नहीं बरसता?

क्योंकि 'कालापानी' नामक द्वीपको सूरज भाप बनाकर उड़ा नहीं पाता!

चंद्रमौलि झा, चम्पानगर (भागलपुर) :

कोयलेसे कालापन निकलने पर क्या बचेगा?

राख!

अभय फर्रुखाबादी, फर्रुखाबाद :

यदि कोई मनुष्य सचको झूठ और झूठको सच माने, तो उसका इलाज?

चिकित्सा संबंधी प्रश्न सीधे डाक्टरोंसे पूछने चाहिएं!

रेनू रानी गोयल, जौनपुर :

अक्सर फल पक जानेपर लाल-पीले होते हैं, परंतु जामुन ही काली क्यों?

इसलिए कि बेचारी कमसे कम रंगभेद मानने वालों के मुख-गह्वरसे तो बची रहे!

रमेशकुमार नेमा, बेगमगंज (जिला रायसेन) :

बच्चोंके सिरके बाल तो बढ़ जाते हैं, पर दाढ़ीके क्यों नहीं बढ़ते?

क्योंकि वे दाढ़ीके बालोंके सिर नहीं पड़ते!

मनजीत सिंह, फतहगढ़ :

क्या 'सरकार' के सरपर वास्तवमें कार होती है?

कार भले ही सरकारके सर मढ़ दो, पर परीक्षामें संधि-समासका यह उदाहरण न लिख आना कहीं!

★ उर्मिलाकुमारी, द्वारा श्री रामपाल जौली, लोकस्ट फार्मिंग आफिसर, लोकस्ट आउट पोस्ट, सीकर (राजस्थान) :

वह कौनसी चीज है जो बच्चोंको मुफ्त मिलती है, जवानोंको चुगनी पड़ती है, बुड्ढों को खरीदनी पड़ती है?

'पराग'!

राजेंद्रसिंह सलूजा, जयपुर :

खानेके फल तथा अच्छे या बुरे कर्मके फलमें क्या अंतर है?

खानेके फल सड़नेसे पहले ही खा लिये जाते हैं, अच्छे कर्मोंके फल कभी सड़ते नहीं और बुरे कर्मोंके फल सड़े हुए पैदा होते हैं और उन्हें खाना ही पड़ता है!

सत्यनारायण उपाध्याय, जमशेदपुर-५ :

कहावत है कि 'मान खो देता है हर रोज का आना-जाना', लेकिन हमारी चिट्ठियां तो प्रतिदिन आपके पास जाती हैं, तो क्या वे अपना मान खो देती हैं?

नहीं, क्योंकि यहां आना हर रोज होता है, पर जाना महीनेमें सिर्फ एक बार!

★ अशोककुमार, द्वारा श्री सरयूशरण सिंह, कार्यपालक अभियन्ता, नहर आफिस, बक्सर, शाहाबाद (बिहार) :

आप अपनी दाढ़ीके घुसपैठियों—जुओं, खटमल आदि—का क्या इलाज करते हैं?

संकट-कालमें सैनिक भेद प्रकट करना मना है!

दीपककुमार दुबे, छिन्दवाड़ा :

चस्का, चकमा और चश्मामें क्या अंतर है?

यह तो इसीसे साफ जाहिर है कि पाकिस्तानको डींग हांकनेका चस्का पड़ गया है, चकमा ही उसका राष्ट्रीय अस्त्र है और चश्मेमें कश्मीर अपनी हदके अंदर नजर आता है!

हुकुमचंद गोयल, उज्जैन :

मेरा मित्र कहता है वह चांदपर निशाना लगा सकता है। मैं कहता हूं नहीं लगा सकता। बतलाइए, कौन सही है?

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. ऑ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१।

लगा तो सकता है, पर इसके लिए किसी पाकिस्तानी घुसपैठिएकी अच्छी घुटी हुई चांद देखो!

किरण मिनहास, यमुनानगर (अम्बाला) :

क्या कारण है कि आप अपनी दाढ़ीका जिक्र तो सदा करते हैं, लेकिन मूंछोंका नाम तक नहीं लेते?

दाढ़ीको जब चाहें तब पेटमें रखा जा सकता है—इसी लिए!

गयाप्रसाद सतपथी 'दीपक', सम्बलपुर :

अफवाहके न तो पर होते हैं और न पैर, फिर भी वह इतनी जल्दी सभी जगह कैसे घूम जाती है?

कोठेपर चढ़कर—सुना नहीं, निकली होठों, चढ़ी कोठों!

श्रीप्रकाश अग्रवाल, साकची, जमशेदपुर :

यदि आपको देशके सेनाध्यक्षकी पदवी प्रदान की जाए, तो आप हमारे लिए क्या करेंगे?

हम तुम्हारे लिए कराचीका हलुवा लाएंगे—हः हः!

तिलक वर्मा, झुमरीतिलैया :

बुद्धि और चतुराईमें क्या अंतर है?

जो भारत और पाकिस्तानमें है!

मनुष्य अपना सुख बांट सकता है, पर दुःख नहीं, क्यों?

क्योंकि दुःखको महादेवजीकी चिप्पकका वरदान प्राप्त है!

अशोककुमार गोयल, दिल्ली-६ :

मास्टरजी हमें एक किताब आठ महीने में समझाते हैं, लेकिन 'पराग' बिना समझाए समझ में आ जाता है—क्या बात है?

बात यह है कि 'पराग' पढ़ते पढ़ते तुम स्वयं अपनी परीक्षा अनजाने ही लेते चलते हो, जबकि परीक्षकका भूत दस महीनेके अंतरपर लाल मुंहकी कलम लिये तैयार बैठा रहता है!

राधेश्याम, दुर्ग :

'पराग' में क्या खूबी है जिससे उसे बालक-बूढ़े, युवक, युवतियां सब पढ़ा करते हैं?

खूबी यही है कि 'पराग' उस समझदार बालकको गुदगुदाता है, जो हर युवक-युवती और वृद्धके मनमें कहीं न कहीं छिपा बैठा रहता है!

कैलाश पाराशर, बिलासपुर :

हमारे पांव किस कंपनीके बने हैं कि सारी आयु चलनेपर भी नहीं घिसते, जबकि प्रसिद्ध कंपनियोंके बूट भी कुछ ही माह चलते हैं?

याद कर लो उस कंपनीका नाम है 'राक्षस रक्तबीज एंड कंपनी'!

अशोककुमार जाजू, आर्वि (वर्धा) :

संसारमें सबसे ईमानदार व्यक्ति कौन है?

पाकिस्तानके विदेश मंत्री श्री जुल्फिकार अली भुट्टो, जो दुनियाकी सबसे बड़ी बेईमानीको भी ईमानदारीके साथ करते हैं!

अशोक त्यागी, फुलेरा :

नाक व आंखसे जुकाममें भी पानी बहता है, और रोते समय भी, तो जुकाम व रोनेका क्या संबंध है?

बहुत सीधासादा संबंध है—पाकिस्तानको कश्मीर का नाम लेते ही सरदीसे जुकाम हो गया है और दुनिया समझ रही है कि वह अपने अमरीकी खिलौने टूट जाने पर रो रहा है!

प्रमोदकांत त्रिपाठी, वाराणसी :

परीक्षा-फल और पेड़के फलमें क्या अंतर है?

यही कि परीक्षा-फल पेड़पर नहीं लगते!

सुरेंद्रकुमार, कानपुर :

समुद्रमें कितनी शक्कर डाली जाए कि उसका पानी पीने लायक शर्बत बन जाए?

पहले उसे पीने लायक बनानेके लिए उसका नमक निकालनेका इंतजाम करो!

लक्ष्मण 'रावतानी', सुजानगढ़ (राज०) :

मनुष्यका तो पल-प्रतिपल मूड बदलता रहता है, परंतु जानवरोंका मूड क्यों नहीं बदलता?

उन्हें इसकी फुरसत ही नहीं रहती!

पक्षियोंको उड़ते देखकर बेचारी मछलियां क्या सोचती होंगी?

ये सबके सब 'नैट' ही हैं या कोई आधा-चौथाई 'सैबर जैट' भी है! ●

कहानी

एक रुपया चोरी का

"लाल गोली उड़ाऊं या हरी?" रमेशने सामने बिखरे हुए कंचोंकी ओर निशाना साधते हुए कहा।

"लाल ही उड़ाओ. . ." उत्तर मिला।

लेकिन रमेश लाल गोलीपर निशाना न लगा सका। अब सुधीरकी बारी थी।

सुधीरका निशाना कम ही चूकता था। सो इस बार भी सफलता उसीके हाथ लगी। निराश होकर रमेशने जेबें टटोलीं, किंतु एक भी गोली नहीं बची थी।

"क्यों, हो गए खुक्ख?" सुधीर मुस्कराया।

"हां, यार," रमेशने कुछ झेंपते हुए कहा। "आज न जाने क्यों हाथ कांप रहा है? ठीक तरह निशाना सधता ही नहीं।"

"खैर, कोई बात नहीं। एक दर्जन गोलियां और ले लो," सुधीर बोला। "पूरा एक रुपया हो जाएगा।"

"नहीं, यार, अब रहने दो। बहुत गोलियां हार चुका हूं," रमेशने कुछ सोचते हुए कहा।

"अमां, इतनेमें ही घबड़ा गए! हार-जीत तो लगी ही रहती है। हो सकता है कि इस बार बाजी तुम्हारे हाथ लगे।"

रमेशने चुपचाप सुधीरके हाथसे एक दर्जन गोलियां और ले लीं। लेकिन इस बार भी उसीकी हार हुई।

उदास-सा होकर जब रमेश घर जाने लगा, तो सुधीरने कहा, "हां, भाई, पूरा एक रुपया उधार हो गया। कब तक दे दोगे?"

"दस-बारह दिन तो लग ही जाएंगे," यह कहकर रमेश वहांसे चल दिया।

यों तो रमेश कंचे बहुत दिनोंसे खेलता आ रहा था, लेकिन उधार लेनेकी आदत कुछ ही दिन पहले पड़ी थी। खेलते समय तो वह तावमें आकर उधार कर लेता था, पर बादमें उसे सदा ही पछतावा होता था।

रमेश हर रोज यह निर्णय करता कि वह भविष्यमें कभी उधार न करेगा, लेकिन अगले दिन ही वह अपना निर्णय भूल जाता। होते होते अब उसपर एक रुपया उधार हो गया था।

रमेशके घरकी दशा इतनी अच्छी न थी कि वह एक रुपया आसानीसे चुका देता। दूसरे लड़कों-की तरह उसे हर महीने जेब-खर्च भी न मिलता था। इसी लिए वह सोचमें पड़ा हुआ था कि उधार कैसे चुकाया जाए।

•

इधर पिछले कुछ दिनोंसे रमेश घरसे बाहर कम ही निकल रहा था। असलमें वह सुधीरकी दृष्टिसे छिपना चाहता था।

यों ही दस-बारह दिन बीत गए। एक दिन सुधीर रमेशके घर आ धमका।

"क्यों, आजकल किधर छिपे रहते हो?" सुधीरने तीखे स्वरमें कहा। "मुझे पैसोंकी जरूरत है, किसी तरह कल तक रुपयेका इंतजाम कर दो।"

"ठीक है, कल दे दूंगा।"

कहनेको तो रमेशने यह कह दिया, लेकिन सुधीरके जानेके बाद वह सोचता रहा कि उसके पास रुपया आएगा कहांसे। मांके पास तो होगा नहीं और पिताजीसे मांगनेकी उसकी हिम्मत



न होती थी।

रातको जब रमेश पढ़ रहा था, तो उसकी दृष्टि खूंटीपर लटकी पिताजीकी कमीजपर गई। तत्काल ही उसके दिमागमें एक बात आई। फौरन उसने पिताजीके बटुएको कमीजकी जेबसे निकाल लिया। अंदर मुड़ा-तुड़ा रुपयेका एक नोट रखा हुआ था। रमेशने उसे जेबके हवाले किया और बटुएको ज्योंका त्यों रख दिया।

सवेरे उठकर रमेशने पहला काम यह किया कि सुधीरका उधार चुका दिया। रुपया देकर उसे ऐसा लगा, जैसे सिरपरसे बहुत भारी बोझ उतर गया हो।

●

शामका समय था। उस समय रमेश बरामदे में बैठा स्कूलका होम-वर्क कर रहा था। पास ही उसकी मां बैठी सब्जी काट रही थी।

तभी वहां रमेशके पिता रामप्रसादने प्रवेश किया। उसकी मांसे उन्होंने पूछा, "बटुएसे रुपया क्या तुमने निकाल लिया था?"

"नहीं, मैंने तो बटुएको छुआ भी नहीं. . ."

"न जाने रुपया कहां चला गया. . . ?" रामप्रसादने गहरी सांस लेते हुए कहा। "कल सब्जी लेते वक्त मैंने जेबसे बटुआ निकाला था, शायद वहीं न गिर गया हो. . ."

कुछ देर बाद रमेशको पिताका बुझा हुआ स्वर सुनाई दिया, "बड़ी मुश्किलसे खर्चमें कटौती करके रुपया बचाया था। रमेश कई महीनोंसे फाउन्टेन पेन लेनेके लिए जिद कर रहा था। सोचा था इस बार उसकी भी जिद पूरी कर दूंगा। लेकिन रुपया ही हाथमें न रहा. . . ."

रमेश यह सुनकर स्तब्ध रह गया। अपने कक्षाके साथियोंके पास जब वह पेन देखता था, तो उसकी इच्छा भी वैसा ही पेन लेनेकी होती थी। लेकिन मजबूर होकर उसे दो आनेवाली कलमसे ही काम चलाना पड़ता था।

रमेशको बहुत दुःख हुआ। अगर उसने सुधीरसे उधारमें कंचे न खरीदे होते, तो यहां तक नौबत न आती। उसके पास भी एक फाउन्टेन पेन होता—बिल्कुल नया और चमकता हुआ। अब शायद उसकी यह इच्छा महीनों तक पूरी न हो सके।

उस रातको सोते समय रमेश सोच रहा था—क्या उसे पिताजीको सब कुछ सच सच बता देना चाहिए? लेकिन. . .लेकिन वह उसपर कितना विश्वास करते हैं। दूसरे ही क्षण वह उसे अविश्वासकी दृष्टिसे देखने लगेंगे।. . .तो फिर क्या उसको चुप रहना चाहिए? किंतु यह भी तो ठीक नहीं है। इन्हीं सब विचारोंमें डूबे हुए रमेशको नींदने आ घेरा।

-विनोदकुमार भारद्वाज





विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है... आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है... वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखायी दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा, जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाडला मुन्ना स्वस्थ और हँसता-खेलता उठेगा।



विक्स वेपोरब

३ साइज़ में

•

अगले दिनकी सुबह । रामप्रसाद आराम-कुर्सीपर बैठे अखबार देख रहे थे। तभी उनके सामने रमेश आकर खड़ा हो गया चुपचाप ।

"क्यों, रमेश, चुप क्यों हो? क्या मुझसे कुछ कहना है?" रामप्रसादने अखबारके पृष्ठसे दृष्टि हटाते हुए पूछा।

"जी. . . पिताजी. . ." रमेशने कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द होंठोंसे बाहर न निकल पाए।

"हां हां, क्या बात है? इतने घबड़ाए हुए क्यों हो?"

"असलमें, पिताजी, वह जो कल आपका एक रुपयेका नोट खो गया था न . . ."

"क्यों? क्या वह मिल गया?"

"नहीं, पिताजी," रमेशके स्वरमें कंपन था, "सुधीरका मुझे उधार चुकाना था। इसलिए मैंने आपकी जेबमेंसे उस नोटको चोरीसे निकाल लिया था . . . मैं अपराधी हूं। मुझे सजा मिलनी चाहिए।"

रामप्रसाद अवाक् रह गए। अखबार हाथसे छूट गया। इसका मतलब . . .रमेशने चोरी की है? उनके प्यारे रमेशने . . . !

रमेश सिर झुकाए खड़ा था।

कुछ क्षणों तक वातावरण शांत रहा। रामप्रसाद एकाएक कोई निर्णय न कर पाए कि रमेश को सजा दी जाए अथवा नहीं। रमेश उनका एकमात्र पुत्र था, अतः उसपर हाथ उठानेकी इच्छा नहीं हो रही थी। और फिर उसने अपना अपराध भी तो स्वीकार कर लिया था। तो. . . क्या उसे क्षमा कर देना चाहिए? नहीं. . . उसको सजा मिलनी ही चाहिए। आखिर उसने चोरी तो की है।

किंतु न जाने क्या सोचकर रामप्रसादने रमेशसे कहा, "अच्छा होता अगर तुम अपनी कठिनाई मुझसे कह देते। चोरी करके तुमने ठीक नहीं किया . . . खैर, अब तुम जाकर तैयार हो। स्कूलका टाइम हो रहा है।"

रमेश वहांसे चला गया।

थोड़ी देर बाद उसकी मांने वहां आकर कहा, "खाना तैयार है. . . "

"आज भूख नहीं है," रामप्रसाद उठते हुए बोले। "साहबने आज दफ्तर जल्दी बुलाया है। मैं चलता हूं . . ."

•

रातको जब रमेश खाना खाने बैठा, तो उसने मांसे पूछा, "मां, पिताजी बाहर खाट पर क्यों लेटे हैं? क्या उन्होंने खाना खा लिया?"

"नहीं, बेटा, उन्होंने सुबह भी खाना नहीं खाया था . . ." लेकिन फिर वह अचानक कहते कहते रुक गई। "अच्छा, तुम तो खाना खाओ। उनकी तबियत ठीक नहीं है।"

रमेश चुपचाप खाना खाने लगा। खाना खाकर जब वह नलपर हाथ धो रहा था, तो मां धीमेसे बोली, "बेटा, जानते हो, आज तुम्हारे पिताजीने उपवास क्यों किया?"

रमेशने प्रश्नसूचक दृष्टिसे मांको देखा।

वास्तवमें रामप्रसादने रमेशकी मां के बहुत पूछनेपर अपना उपवास रखनेका कारण बतला दिया था। अतः उसने बहुत धीमेसे कहा, "उन्हें सबेरेसे यही बात बराबर कचोट रही है कि वह अपने इकलौते बेटेको चोरीके अपराधसे बचा न सके। इसी दुःखमें. . . "

यह सुनकर रमेश मांको देखता रह गया। सचमुच अनजानेमें चोरी करके उसने कितना बड़ा अपराध कर डाला था। पिताजीको उसीके कारण आज उपवास रखना पड़ा . . . । रमेश सोचता रहा। सोचता रहा।

•

दो दिन बीत गए।

रामप्रसाद ऑफिससे अभी आए ही थे कि रमेशने पास आकर उनके चरणोंमें एक रुपया रख दिया।

"यह क्या, बेटा?" रामप्रसाद कुछ समझ न सके। वह कुछ चकितसे होकर कभी नोटको देख रहे थे और कभी रमेशकी ओर।

"पिताजी, कल मैंने रद्दी अखबारोंसे लिफाफे बनाकर बेचे थे . . ." रमेशने रुंधे स्वर में कहा, "उन्हींसे इस रुपयेकी आमदनी हुई है। अब आप मुझे नया फाउंटेन पैन ला देंगे न?"

रामप्रसाद एक पल अपने बेटेकी ओर देखते रहे। फिर एकाएक भावावेशमें आकर उन्होंने उसे गलेसे लगा लिया। रमेशकी आंखें गीली हो गईं, लेकिन उसके चेहरेपर एक अपूर्व मुसकान थिरक रही थी।

●

नगरसे बाहर खेत थे। खेतोंसे परे एक सघन वन था। वनमें एक लोमड़ी रहती थी। लोमड़ी प्रतिदिन मनमें सोचती : 'हाय! काकू किसानकी मुर्गी कितनी मोटी-ताजी है! काश, मैं इस मुर्गीको खा सकती!' काकू किसान गांव से बाहर अपने खेतके किनारेवाले घरमें रहता था। उसके घरमें बहुत-सी मुर्गियां पली हुई थीं। एक कुत्ता भी था, जिसका नाम मोती था। काकू किसानकी पत्नी लीला बहुत सुघड़ गृहिणी थी। वह काकूके सभी कपड़े खुद ही धोया करती थी।

एक दिन वनसे लोमड़ी निकलकर काकू किसानके घरके पास पहुंच गई। उसे मुर्गियोंके कुड़कुड़ानेकी आवाज सुनाई दे रही थी। सामने ही मुर्गियोंका दड़बा था। दड़बेकी छतपर एक मुर्गा सीना फुलाए बांग दे रहा था और सबसे मोटी मुर्गी दड़बेके सामने बैठी धूप खा रही थी। लोमड़ीने मनमें सोचा : 'आह! काकू किसान की मुर्गी कितनी मोटी-ताजी है! काश, मैं इस मुर्गीको खा सकती!'

लोमड़ीने यह बात मनमें सोची ही थी कि मोतीने भौंकना शुरू कर दिया। लोमड़ी मोतीसे बहुत डरती थी। वह वापस मुड़ी और भागकर उसने वनमें जाकर ही सांस ली। अब वह सोचने लगी—'यह मोती कितना भयानक कुत्ता है! अगर वह न होता, तो मैं मुर्गीको चट कर जाती।'

अगले दिन लोमड़ी काकू किसानके घर फिर जा पहुंची। दड़बेके सामने जाकर उसने मोटी मुर्गीको देखा और मुर्गेकी बांग भी सुनी। लोमड़ीने फिर मनमें सोचा : 'काकू किसानकी मुर्गी कितनी मोटी है! काश, मैं इस मुर्गीको खा सकती!'

काकू किसानके भयानक कुत्ते मोतीको तुरंत पता चल गया कि घरमें कोई लालची लोमड़ी आ गई है। बस, वह इतने जोर जोरसे भौंका कि काकूको भी पता चल गया कि अवश्य कोई लोमड़ी घरमें आ गई है। काकू अपनी लाठी लेकर घरसे बाहर निकल आया। लोमड़ी डर गई और तुरंत उलटे पांव वनकी ओर भागी। लोमड़ीके पीछे मोती भागा और मोतीके पीछे काकू और काकूके पीछे लीला भी घरसे निकल आई। पर, वह दरवाजेमें ही रुक गई और दांतोंमें उंगली दबाकर तमाशा देखने लगी।

लोमड़ी सबसे तेज दौड़ी। उसके पीछे मोती था, लेकिन काकू सबसे फिसड्डी रहा। लोमड़ीको कोई न पकड़ सका और वह सघन वनमें जा छुपी। उसकी जान बाल बाल बची थी। उसकी सांस फूल गई थी। काफी देर तक हांफनेके बाद उसने मनमें सोचा : 'आह! काकू किसान तो बहुत निर्दयी है और मोती तो बहुत तेज दौड़ता है। अगर ये मेरा पीछा न करते, तो आज मैं मोटी मुर्गीको

कहानी

काकू के कपड़े



जरूर चट कर जाती ।' फिर लोमड़ीने एक तरकीब सोची और मनमें बहुत प्रसन्न हुई ।

अगले दिन लोमड़ी काकू किसानके घर नहीं गई । बल्कि सारा दिन हड्डियां इकट्ठा करती रही । शाम होने तक उसने बहुत सी हड्डियां इकट्ठा कर लीं । फिर मनमें कहा : 'अब मैं इन हड्डियोंको किसानके घरसे लेकर वन तक फैला दूंगी और मोती मेरा पीछा करनेकी बजाय इन हड्डियोंको ढूंढेगा ।'

लोमड़ी यह तरकीब सोचनेके बाद उस दिन-की प्रतीक्षा करने लगी, जब हवाकी दिशा वन की ओर हो । अंतमें एक दिन वनकी ओर हवा चलने लगी । पेड़ हवासे झूमने लगे और घास-फूस और सूखे पत्ते हवाके साथ उड़ने लगे ।

उस दिन काकूकी पत्नी लीलाने सोचा : 'क्यों न आज पतिके सभी पायजामे और कमीजें धोकर हवामें सुखा लूं ।' और उसने कपड़े धोकर घरके बाहर मैदानमें रस्सी बांधकर फैला दिए ।

इधर लोमड़ीने भी अपना काम किया और वनसे लेकर किसानके घर तक बहुत सारी हड्डियां बिखेर दीं । फिर वह वनके एक सिरेपर बैठकर मोतीकी प्रतीक्षा करने लगी । मोतीकी नाक बहुत तेज थी । उसे पता चल गया कि घरके पास बहुत-सी हड्डियां पड़ी हैं । मोतीकी भूख चमक उठी और उसकी राल टपकने लगी । आखिर वह घरसे बाहर निकला और हवामें सूंघता हुआ वनमें दूर, बहुत दूर तक चला गया । अब लोमड़ी अपने मनमें बहुत प्रसन्न हुई और जा पहुंची काकू किसानके घर ।

लोमड़ीने देखा कि दड़बेकी छतपर वही मुर्गा सीना फुलाकर बांग दे रहा है और काकू किसानकी सबसे मोटी मुर्गी दानेकी तलाशमें दड़बेसे बाहर घूम रही है । काकू किसान सो रहा था । लीला रसोईघरमें थी ।

अब लोमड़ी दबे पांव घरके और निकट आ गई । सहसा उसे जमीनपर बहुत सी टांगें और बांहें हिलती हुई नजर आईं । लोमड़ीका मन धक्से रह गया । उसने सोचा : 'अरे, यहां तो आज सैंकड़ों आदमी हैं और ये सब मुझे पकड़ना चाहते हैं ।' लोमड़ीने पलटकर देखा, वहां भी बहुत-सी टांगें नजर आईं । अब तो लोमड़ीको बेहद डर लगा । उसने तुरंत वनकी ओर मुंह किया और आंखें मींच कर दौड़ने लगी । दौड़ते दौड़ते आधा वन पार कर गई, पर वह यही सोच रही थी कि सैंकड़ों आदमी उसके पीछे आ रहे हैं । वह और

(शेष पृष्ठ ५१ पर)



—हरपाल अरोड़ा

फोटो-कथा

खेल में खलल



← वाह, वाह, मजा आ गया इस खेल में !



अरे, भागा कहां जा रहा है मुझसे बचकर ? →



अगर इसे पकड़ न लिया, तो मेरा नाम लल्लू नहीं ! →

फोटो : जग्गू पोठवा



↑
अब क्या हो, यह तो जान
बचाकर पानी में आ गिरा!



→
अगर मम्मी को पता चल गया,
तो मेरे कानोंकी खैर नहीं!

↓ जो होगा सो देखा जाएगा,
घर तो आना ही पड़ेगा !





कहानी

सीखों का जंजाल

गोविन्द झा

मैं हूं रमेश। तेरह सालका लड़का हूं। वैसे लड़का-लड़की होना कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है कि मैं बच्चा हूं। और बस इसी लिए सबोंसे उपदेश सुनता रहता हूं। मुझे ऐसा लगता है कि बच्चा होना जैसे कोई जुर्म हो। जो चाहे और जब चाहे बच्चोंको उपदेश पिला सकता है, उसकी मर्जीके खिलाफ जबरन उसको कोंच सकता है।

बच्चोंकी गलतीको सुधारनेके लिए कोई दूसरा तरीका क्यों नहीं निकालते ये बड़े-बूढ़े? क्यों नहीं ये लोग अपने बचपनसे अब तककी खुदकी गलतियोंकी ओर देखते?

मेरे पिताजी जवाब न देनेपर डांटते हैं, पर वह भी तो अपने ऑफिसरके सामने चुप्पी साध लेते हैं। कहते हैं—छोटी कौमके लड़कोंसे न मिलो, क्योंकि यह उन्हें पसंद नहीं। पर वह दिन-रात सिग्रेटके कश खींचते रहें, मुझे भी तो यह पसंद नहीं। और मां कहती है—स्वावलंबी बनो और खुद घरके कामोंमें नौकरानी के अलावा दीदीको भी जुटा लेती है। जब तक दीदी न आएं हिलने-डुलनेका नाम ही नहीं लेती। और शिक्षक समयकी उपयोगितापर जोर देते हैं, पर स्वयं क्लासमें रोज दो मिनिट देरीसे आते हैं। कहते हैं—'काल करे सो आज कर', पर खुद कई दिनोंसे एक नोट लिखानेकी बातको टालते चले जा रहे हैं।

लगता है उपदेश देना इन बड़े-बूढ़ोंका जन्म-सिद्ध अधिकार है। पर मैं रोज प्रार्थना करता हूं भगवानसे कि वह बचाएं ऐसे बड़े-बूढ़ोंसे जो कदम कदमपर बच्चोंको उपदेशोंकी गोलियां खिलाते रहते हैं। वैसे वे सभी मेरी भलाईके लिए ही कहते हैं, पर मुझे लगता है कि उन लोगोंके हृदयमें मेरे लिए थोड़ा-सा भी स्नेह नहीं है। अगर स्नेह होता, तो ऐसी कड़वी कड़वी बातें न कहते। विश्वास न हो, तो लो सुनो उन्हीं लोगोंके शब्दोंमें उनके उपदेशोंके कुछ नमूने :

पिताजी :

रातमें काफी देरसे घर लौटा था। बड़ी सावधानीसे आंगनमेंसे गुजर रहा था कि पिताजीने देख लिया। फौरन तलबी हुई। पास पहुंचा, तो बिछावन पर बैठ जानेके लिए कहा गया। मैं बैठ गया। आज उनकी आवाज बहुत कुछ शांत थी। मुझे इसपर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। न जाने आज कौन-सी आफत सिरपर आनेवाली है—बैठा बैठा उसीके बारेमें सोच रहा था कि उन्होंने पूछा—'रमेश इतनी रात गए कहांसे आ रहे हो?'





मैं चुप रहा।

'बोलो, भई, जवाब दो। मैं क्या पूछ रहा हूं, सुनते हो कि नहीं?'

मैं फिर भी चुप रहा।

'देखो, बेटा, जो मैं पूछता हूं उसका जवाब दो, डरो नहीं।'

मैं फिर भी चुप रहा।

'शायद डरते हो। डरना बुजदिली है। सांचको आंच क्या! बताओ बताओ, क्या बात है?' इतना कहकर पिताजी मेरे उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगे।

और मुझसे फिर भी जवाब देते न बना।

'तुम समझते क्यों नहीं? न मैं तुम्हें डरा रहा हूं, न धमका रहा हूं और न पीट रहा हूं। फिर यह चुप्पी क्यों? चुप्पी साध लेना या सही सही जवाब न देना बच्चोंकी सबसे बड़ी कमजोरी है। होनहार बच्चे जवाब देनेसे कभी नहीं डरते। जो डरके मारे चुप्पी साध लेता है, वह दिन दिन दब्बू बनता जाता है। उसके जीवनका सारा विकास रुक जाता है। इसलिए आजसे यह बात गांठ बांध लो, बेटा, कि चाहे सत्य कितना ही भयंकर क्यों न हो पूछे जाने पर उसका प्रकट होना बहुत जरूरी है। समझे?'

मैंने सिर हिलाकर 'हां' कहा।

'फिर वही गलती,' पिताजीने कहा। 'सिर हिलाकर हां-ना करना बड़ी नादानी है। समझे?'

'हूं' मैंने कहा।

'नो,' पिताजी ने कहा, 'साफ शब्दोंमें कहो। इससे बच्चोंमें छोटा होनेकी भावना घर कर जाती है। जोरसे और साफ शब्दोंमें जवाब देनेकी आदत डालो। समझे?'

'जी,' मैंने जोरसे और साफ तौरपर कहा।

'अब ठीक है,' पिताजीने कहा। 'अब मेरे प्रश्नका जवाब दो।'

'सुबह जो खेलने निकला सो अभी तक खेलता ही रहा और कुछ नहीं, पिताजी,' मैंने कहा।

'सुबहसे अब तक याने कि दिन भर?' पिताजीने कहा। 'इसका साफ मतलब है कि तुम समयका महत्व कुछ भी नहीं समझते। यह बहुत बड़ी गलती है। हमारे पास समय बहुत कम रहता है और काम अधिक। लिहाजा यह बहुत आवश्यक है कि हर काम समयपर ही हो। स्कूल जाओ समयपर, घर आओ समय पर। पढ़ो समय पर, खेलो समय पर। जानते हो आजकी लड़ाई भी हथियारकी जगह समयकी लड़ाई है। जो समय पर काम करता है, समय उसका साथ देता है। समयका चूका हुआ

आदमी कहींका नहीं रहता। फिर पछतावा भी बेकार होता है। एक कहावत है—'समय चूकि पुनि का पछिताने।' उदाहरणके रूपमें उन छात्रोंको लो, जो साल भर स्कूल जानेका कष्ट उठाते हैं, फीस देते हैं और अंतमें परीक्षा-फल देखकर बड़े निराश होते हैं। क्यों, जानते हो? समयके प्रति लापरवाहीके कारण। सोचते हैं अभी क्या है, अभी तो एक वर्ष है। अभी तो तिमाही परीक्षा बाकी है, फिर छमाही परीक्षा होगी और तब सालाना। अभी काफी समय है, पूरा एक वर्ष। और तैयारी तो एक महीना कसकर पढ़ाई करनेमें ही हो जाएगी। और वह एक महीना भी वर्षकी तरह यों ही दिनों, घंटों और मिनिटोंमें बंटकर खत्म हो जाता है। और तब हाथ आता है सिर्फ पछतावा। समझ रहे हो न, रमेश?'

'हां, पिताजी,' मैंने कहा।

'हां, किसी भी बातको खूब गौरसे सुनना चाहिए। ध्यानसे न सुनना भी आजकलके लड़कों की एक बड़ी खामी है। तन यहां रहेगा और मन कहीं और। इससे बात क्या समझमें आएगी खाक! नतीजा होता है कि छात्र फेल हो जाते हैं। फेल न हों, तो क्या हों! शिक्षक पढ़ाते रहते हैं और छात्र आपसमें कानाफूसी करते रहते हैं। इस प्रकार वे समय, पैसा और सभ्यता तीनोंको मटियामेट कर देते हैं। कहोगे कि पिताजी उपदेश देते हैं। पर, बेटा, सच मानो ये उपदेश नहीं हैं, जो कुछ आज तक मैंने जाना है, महसूस किया है, उसे ही कह रहा हूं। थोड़ा-सा भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं। समय बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है। इसलिए हर काम समयपर करो। जो अपना काम समयपर करता है, वही भविष्यमें महान बनता है। अब जाकर पढ़ो। जो कुछ मैंने समझाया है उसे ध्यानमें रखो। ये सब तुम्हारी भलाईके लिए ही मैंने कहा है।'

माताजी :

'ओ रमेश, उठ। आ जल्दी, चाय पी ले।' मांने मुझे पुकारा। और मैं आंखोंपर किताब रख फिर सो गया। थोड़ी देर उत्तरकी प्रतीक्षा करनेके बाद वह खुद कमरेमें चली आई। मेरा कंधा पकड़कर हिलाया : 'रमेश, उठ।' और मैं उठकर बैठ गया।

'तो तू फिर सो गया था? कई बार तुझे मैंने समझाया कि कमसे कम एक घंटे सुबह पढ़ने की आदत डाल, पर तू है कि सुनता ही नहीं। सुबहको दिमाग साफ रहता है। रात भर सोनेके बाद सुबह दिमागकी थकान मिट जाती है। इसी लिए सुबहका पढ़ा हुआ काफी दिनों तक याद रहता है।'

'मां, मैं सो नहीं रहा था; जो मैं पढ़ चुका था उसे मन ही मन याद कर रहा था,' मैंने सफाई दी।

'अच्छाऽऽऽ!'

'हां, मां।'

'तो चल उठ, चाय पी ले और स्कूलके लिए तैयार हो जा,' मां इतना कहकर चली गई।

मैं स्कूल जानेकी तैयारी करने लगा। पर मेरा सारा सामान तितर-बितर था। कुछ मिल नहीं रहा था। मैं जोर जोरसे चिल्लाने लगा : 'मेरा तौलिया कहां है? मेरी पैंट यहां रखी थी, पर अब गायब है। देखो इस नन्हीकी शैतानी, इसने भीतरसे बाथरूम ही बंद कर लिया है। मुझे नहानेको देर हो रही है। स्कूल जानेको देर हो गई, तो मैं आज जाऊंगा ही नहीं।'

शोरोगुल सुनकर मां आ गई। वह मेरे कपड़ों को ढूंढने लगी और कहने लगी—'अरे बेटा, बहाना बनानेसे क्या फायदा। स्कूल जानेको मन नहीं है ऐसा क्यों नहीं कहता। नाहक दूसरों पर इलजाम लगा रहा है; अपनी चीजोंको आप ही क्यों नहीं संभालकर रखता? अब तू कोई बच्चा तो नहीं है। अपना सारा काम स्वयं करो। जो अपना काम अपने आप करता है वह स्वावलंबी कहलाता है। जाओ, जल्दी तैयार हो जाओ।' और मैं तैयार होकर स्कूल चला गया।

शामको लौटते ही देखा कि मेरी छोटी बहन नन्ही दादाकी जेबसे पैसे निकाल रही थी। चुपकेसे जाकर मैंने मांसे कह दिया, तो मांने मुझे समझाते हुए कहा, 'बेटा, चोरी करना तो अच्छा नहीं है, पर दूसरेकी शिकायत करना भी ठीक नहीं और वह भी उसकी पीठ पीछे। इससे दुश्मनी बढ़ती है। चुगलखोर बच्चे अच्छे नहीं माने जाते।'

मैं अपना-सा मुंह लेकर खेलने चला गया। बत्ती जल चुकी, तो मैं घर लौट आया। मेरे पीछे पीछे छोटा भाई सुरेश भी रोता हुआ आ रहा था। उसने मांसे कहा—'मां, आज भैयाने मुझे बहुत मारा है। खेलमें भैया हार रहे थे। इसीसे खीझकर इन्होंने पप्पूको भी मारा है।'

बस इतना ही काफी था। मां उबल पड़ी: 'यह क्या है, रमेश? रोज किसी न किसीसे झगड़ा कर लेते हो। और बात बातमें मारा-मारी कर लेते हो। खेलमें इस प्रकारकी हरकत बिल्कुल गलत है। खेल है, तो हार-जीत भी है। हार जाने पर खीझना कमजोरीकी निशानी है। अब तू इतना छोटा बच्चा भी तो नहीं कि कुछ न समझे। लाख समझाती हूं, पर तू समझनेका नाम ही नहीं लेता। इस कानसे सुनकर उस कानसे निकाल देता है। आखिर कहनेकी भी कोई सीमा होती है। आपसके साथियोंसे मेल-मिलापसे रहो, इतना भी नहीं होता है तुमसे! मैं समझाती-समझाती हैरान हो गई हूं और तू है जो सुधरने का नाम नहीं लेता। यह बात अच्छी नहीं। मैं तुम्हारी मां हूं, कोई दुश्मन नहीं। तुम्हारी भलाई के लिए ही कह रही हूं।'

उसी समय मांकी एक सहेली मांसे मिलने आ गई। मुझे राहत मिली और मैं मुड़कर चलने को तैयार हुआ कि मांने कहा, 'बेटा, थोड़ी शिष्टता तो सीखो। कोई बाहरसे आए, तो कमसे कम उसे नमस्कार तो कर लिया करो। क्या स्कूलमें इतना भी नहीं सिखाया गया?'

और उन्हें प्रणाम कर मैं लौट पड़ा। पीछे मांकी सहेली मांसे कह रही थी—'अजी क्या पूछती हो इन बच्चोंका, सभी एक ही तरहके हैं। आजकलके बच्चे होते ही ऐसे हैं। नम्रता या शिष्टता तो इन्हें छू तक नहीं गई . . . ।' उस समय तक मैं काफी दूर निकल गया था। लेकिन मुझे लगा कि आजकलके बच्चोंपर दोनोंमें काफी बहस चल रही है।

उस रात खाना खानेके लिए मैं जरा देरसे लौटा। सभी मेरी प्रतीक्षामें रुके हुए थे। जैसे ही मैं वहां पहुंचा, सबोंकी आंखें मेरी तरफ इस तरह उठीं जैसे मैं कोई बहुत बड़ा अपराधी होऊं। मांने कहा—'बेटा, दूसरोंकी सुविधा-असुविधा का भी तो खयाल रखा कर। आ, बैठ जल्दी खानेके लिए। सभी तुम्हारे लिए ही रुके हुए हैं। जल्दी कर।'

मास्टरजी :

'रमेश, क्लासमें तुम सबसे अधिक खेलते हो। तुम्हारा पढ़ने-लिखनेमें मन ही नहीं लगता। यह बहुत बुरी बात है। खेलना बुरी चीज नहीं है, इससे सेहत अच्छी रहती है। पर हर चीज का अपना अपना समय होता है। खेलनेके समय खेलो और पढ़नेके समय पढ़ो। पर तुम्हारा मन कक्षामें कभी नहीं लगता, कहीं न कहीं दूसरी जगह ही उलझा रहता है। यह बहुत बुरी बात है। क्लासमें आओ, तो शिक्षककी बात ध्यानसे सुनो और उसे नोट कर लो। कहीं समझमें न आए, तो नम्रतासे फिर पूछ लो। शिक्षककी बातोंको यों ही मजाकमें न उड़ा दो। वह काफी पढ़कर, जानकर और उसका अनुभव करके तुम्हें पढ़ाता है। ध्यानसे सुननेपर तुम्हें सारी बात समझमें आ जाएगी। और अगर तुम न भी समझ पाए, तो तुम्हारी लगन देखकर शिक्षकको तुमसे अपनापा होगा, तुम्हें उससे मिलने-जुलने का मौका मिलेगा। वह तुम्हारी कठिनाइयां बेहिचक सुलझा देगा। इसके लिए वह अपनी सुविधा-असुविधाका भी खयाल न रखेगा। यह तभी होगा जब तुम उसकी बातोंको लगनसे सुनो। बहुतसे छात्र कक्षाकी पढ़ाईपर ध्यान नहीं देते, क्योंकि उनके घरपर ट्यूटर आता है। पर एक बात यह जान लो कि व्यक्तिगत ट्यूशनसे छात्र कमजोर होते हैं। इसलिए घरपर ट्यूशन नहीं पढ़ना चाहिए। इसीसे लड़के कक्षाकी पढ़ाई को ध्यानसे नहीं सुनते। उन्हें यह हमेशा ध्यान में रहता है कि घर जो शिक्षक आएंगे उनसे पूछ लिया जाएगा। सीखनेकी बात इस प्रकार टलती जाती है। इसलिए मैं तुम्हें कहता हूं कि खेलने-कूदनेकी अपेक्षा पढ़नेमें मन लगाओ। और इस प्रकार अपने बहुमूल्य समयका और मां-बापकी गाढ़ी कमाईका सदुपयोग करो . . .'

मुझे शिक्षक यह सब बता रहे थे और मैं ऐसे सिर झुकाकर सुन रहा था जैसे बड़ी तन्मयतासे उन सब बातोंको समझनेकी कोशिश कर रहा हूं, पर दरअसल भीतर ही भीतर मैं मुस्करा रहा था। अगर घंटी न बज जाती, तो मास्टरजीका भी उपदेश चलता ही रहता।

और अब अपनी बात :

. . . पर एक दिन जो घटना घटी, उससे मेरी पहलेकी अपनी धारणाको काफी ठेस लगी। उस दिन माता-पिता किसी खास कामसे बाहर चले गए थे। दीदी भी अपनी सहेलीके घर चली गई थी। भाई साहबका ऐसे दिनोंमें दर्शन हो पाना नामुमकिन ही रहता था। उस दिन घरपर

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

पांव से पंखों तक

—हरिकृष्ण देवसरे

आदमी कभी पांवसे चलता था, अब पंखोंसे उड़ता है। लेकिन यह कैसे संभव हुआ? इसीकी कहानीकी पहली किश्त तुमने पिछले अंकमें पढ़ी थी। लो, अब दूसरी पढ़ो। —संपादक

(२)

दूर उड़ती हुई धूल देखकर चंदनने कहा, "लो मोटर आ गई, चलो।"

चुन्नूने चटपट सामान संभाला। चंदनने हाथ दिखाकर मोटर ड्राइवरको रुकनेके लिए इशारा किया। ड्राइवरने दूरसे ही देखकर समझ लिया था कि आमके नीचे कुछ मुसाफिर खड़े हैं। इसलिए वह मोटरको धीमी रफ्तारसे ला रहा था। आमके पेड़के पास पहुंचकर मोटर रुक गई। चुन्नू और चंदनने अपना सामान मोटरकी छतपर रख दिया। कंडक्टरने उन्हें टिकट दिया और दोनों अंदर जाकर बैठ गए।

मोटर चल दी। सड़ककी अगल-बगल लगे पेड़ पीछेकी ओर भागने लगे। पास बैठे कुछ मुसाफिर ऊंघ रहे थे। एक अखबार पढ़ रहा था। चुन्नू और चंदन कुछ क्षण तक तो खामोश रहे, फिर कुछ बात शुरू करनेके इरादेसे चंदनने कहा, "चुन्नू, देखो कितने मजेसे मोटर भागती जा रही है!"

"हां, भैया," कहकर चुन्नू चुप हो गया।

"लेकिन एक ऐसा भी जमाना था जब मोटर चलनेपर लोगोंने विरोध किया था।" चंदनने बात आगे बढ़ाई, तो चुन्नूका ध्यान बंटा। "तब इन्हें लोग दैत्य समझते थे, डरकर दूर भागते थे। पर जब ये सड़कोंपर चलने ही लगीं, तो घोड़ा-गाड़ी चलाने वालोंने इसका विरोध किया। उन्होंने इन्हें रुकवानेकी कोशिश की।"

चुन्नू बहुत खुश हो रहा था कि चंदन भैया फिरसे कोई अच्छी कहानी सुना रहे हैं। उसने चटसे पूछा, "भैया, घोड़ा-गाड़ीवालोंने मोटरोंको क्यों रुकवाना चाहा?"

"इसलिए कि उनका धंधा कमजोर होने लगा था। कारण यह था कि लोगोंको इस नई सवारी-में बैठनेमें मजा आता और इसमें बैठकर वह जल्दी भी पहुंचते थे।"

"तब फिर क्या हुआ?"

"हुआ यह कि सरकारको मजबूर होकर कुछ नियम बनाने पड़े। पहला नियम यह था कि मोटर-गाड़ी चलानेके लिए कमसे कम तीन आदमी रखे जाएं। दूसरा यह कि एक आदमी लाल झंडी लेकर मोटर-गाड़ीके आगे आगे दौड़ता चले, जिससे कि लोगोंको गाड़ीके आनेकी सूचना मिलती रहे और किसी प्रकारका खतरा न हो। तीसरा नियम यह था कि भापसे चलने वाली मोटरकी चाल चार मील प्रति घंटेसे अधिक न हो। चौथा यह कि रास्तेमें मोटरकी भाप न उड़े।"



"तो क्या पहले मोटर भापसे चलती थी?" एक मुसाफिरने पूछा, जो चुन्नू और चंदनकी बातें बड़े गौरसे सुन रहा था।

चंदनने उत्तर दिया : "हां, पहले भापसे ही मोटर-गाड़ी चलती थी। इसका आविष्कार रिचर्ड ट्रैवेथिक नामक व्यक्तिने सन् १८०२ में किया था। किंतु जब भापके उड़नेपर कानून द्वारा रोक लगा दी गई, तो भापसे चलने वाली मोटर गाड़ियां बंद हो गईं। तब लोगोंने किसी और तरीकेसे उन्हें चलानेकी बात सोची।

"कई वर्षों तक लगातार कोशिश चलती रही। सन् १८८५ में बटलर नामक एक व्यक्तिने एक ऐसी तीन पहिए वाली साइकिल बनाई, जो गैससे चलती थी। इसके अलावा रूटस और नाइट नामके दो व्यक्तियोंने तेलसे मोटरको चलाया। किंतु अंतमें सफलता मिली जर्मनीके निवासी डायमलरको। उन्होंने मोटरको पेट्रोलसे चलाया और तबसे आज तक मोटरें पेट्रोलसे चलती हैं।"

"वाह, भैया, तुमने तो बहुत अच्छी कहानी सुनाई!" सामने बैठे मुसाफिरने कहा।

पर चुन्नूका मन अभी शांत नहीं हुआ था। वह सोच रहा था कि मोटर-गाड़ी तो चलने लगी, पर इसकी चाल इतनी तेज कैसे हो गई? आखिर उसने चंदनसे यह बात भी पूछ ही ली।

चंदन बोला, "हां, पहले तो मोटरकी चाल १५ मील प्रति घंटा होती थी। पर जब पेट्रोलसे चलने लगी, तो लोगोंने चाल बढ़ानेकी कोशिश की। सन् १८९७–९८ में वह २६ मील प्रति घंटा हो गई और सन् १९०० में बढ़ते बढ़ते ५१ मील हो गई। अब तो यह ६० और ८० मीलकी रफ्तारसे भी चलती है।"

चुन्नूका मन कुछ शांत हुआ। लेकिन अभी एक और बात समझमें नहीं आई थी। भापसे मोटर चलने वाली बात तो ठीक लगती थी कि किसी बड़ी अंगीठीको फिट करके भाप बनाई और उससे मोटर चलने लगी। लेकिन पेट्रोल कैसे जलता होगा और वह मोटरको कैसे चलाता होगा? यह बात उसकी समझमें नहीं आई थी।

चंदन समझ गया कि चुन्नू अभी कुछ जानना चाहता है, पर इतने लोगोंके सामने अब बार बार पूछनेमें शायद संकोच कर रहा है। इसलिए उसने प्यारसे कहा, "कुछ और पूछना है?" चुन्नू तो मौकेकी ताकमें था। चटसे उसने अपनी शंका प्रकट की।

"सुनो, मोटरमें एक इंजन होता है और एक सिलिंडर," चंदन समझाने लगा, "पेट्रोल जब टंकीसे सिलिंडरमें पहुंचता है, तो जलने लगता



है और उससे इंजन चलता है। पेट्रोलके जलनेसे बनने वाली गैस मोटरके पुर्जेपर दबाव डालती है, जिसे पिस्टन कहते हैं। यह पिस्टन दबावके पड़नेके कारण आगे पीछे होने लगता है और फिर इसीसे मोटरके पहिए घूमने लगते हैं।"

थोड़ी दूरपर एक गांव मिला। वहां मोटर रुक गई। सब मुसाफिर उतरे। किसीने खाना खाया और किसीने पानी पिया। चंदन और चुन्नूने भी थोड़ा-सा नाश्ता किया। मोटरका ड्राइवर एक पेड़के नीचे बैठा सुस्ता रहा था। चुन्नू उसके पास जाकर खड़ा हो गया। मोटर ड्राइवर उन लोगोंकी बातें सुन रहा था। लेकिन उस समय कुछ नहीं बोला था। जब मोटर चलती है, तो ड्राइवरको बातें नहीं करनी चाहिएं, इससे ध्यान भंग हो सकता है और टक्कर होनेका भय रहता है। चुन्नू उसे देखकर बहुत-सी बातें सोच रहा था—कैसे यह मोटर चलाना सीखा होगा, इसे मोटर चलानेमें कितना मजा आता होगा, आदि आदि। मोटर ड्राइवर बीड़ी पी रहा था, उसे बुझाते हुए बोला, "भैया, तुम्हें मोटरके बारेमें जाननेकी बड़ी इच्छा है। यह बड़ी अच्छी

यह है डिज़्नीलैण्ड!



ईगल फ्लैस्क-परिवार का एक नया और सुन्दर हमजोली!

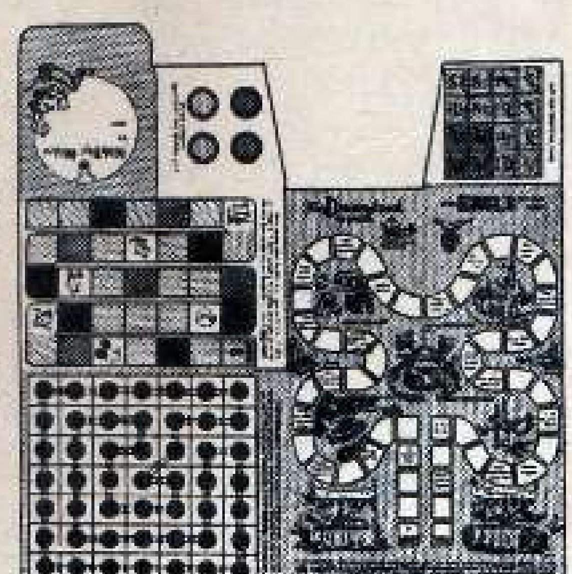
यह सुहाना डिज़्नीलैण्ड फ्लैस्क हर जिन्दादिल इन्सान को बहुत पसन्द आयगा। इसके साथ मशहूर डिज़्नी व्यंग-पात्र भी मिलेंगे जिनसे आपके परिवार का हर सदस्य बहुत खुश होगा। और फिर, आपको ईगल की ये मशहूर खूबियाँ भी हासिल होंगी: फ्लैस्क को बेफिक्री से लेकर चलने के लिए कन्धे पर लटकाया जा सकनेवाला पट्टा, आपके मन-पसन्द चुनाव के लिए ६ सुहाने रंगों में मिलनेवाले प्लास्टिक के मज़बूत ढक्कन, पेटेण्ट लीक-प्रूफ चूड़ीदार स्टॉपर, कन्धे और तली के नीचे झटके रोकनेवाली गद्दियाँ। इसके अतिरिक्त ईगल फ्लैस्क की विश्व-विख्यात उत्कृष्टता तो रहती ही है।

हर डिज़्नीलैण्ड फ्लैस्क एक मैजिक कार्पेट कार्टन में आता है...

यह चमत्कारी कार्टन एक बोर्ड की शकल में बदल जाता है जिस पर हाथ के हाथ तीन दिलचस्प डिज़्नीलैण्ड खेल (डिज़्नीलैण्ड टूर, लकी स्टिक, ऑल एबोर्ड) खेले जा सकते हैं। यह भारत के लिए एक बिल्कुल नयी चीज़ है। हर फ्लैस्क के साथ आपको शतरंज का न टूटनेवाला बोर्ड **बिल्कुल मुफ्त मिलता है।**

इस खूबसूरत कार्टन में एक **डिज़्नीलैण्ड फ्लैस्क आज ही खरीदिए!** आपको और आपके बच्चों को यह बहुत ही पसन्द आयगा!

क्षमता: लगभग ½ लिटर



ईगल वैक्यूम बॉटल मैन्यु. कं. प्रा. लिमिटेड
१४४/४६, जोसेफ देवजी स्ट्रीट, बम्बई ३

CHEV-28A HIN.

बात है। अब तो मोटर पेट्रोलके अलावा डीजल तेलसे भी चलने लगी है। तुम जिस मोटरमें बैठकर यात्रा कर रहे हो, यह डीजलसे ही चलती है। इसमें फायदा यह है कि तेल कम खर्च होता है और मोटरकी रफ्तार तेज रहती है।"

जब ड्राइवरकी बात पूरी हो गई, तो चंदन बोला, "हां, यह बात बताना तो मैं भूल ही गया था।" चंदन पहलेसे आकर खड़े खड़े बातें सुनने लगा था। वह आगे बोला, "भई, अब तो जैसे जैसे विज्ञानकी उन्नति हो रही है, वैसे वैसे मशीनोंमें भी सुधार हो रहा है।"

मोटर चलनेका समय हो गया था। ड्राइवर मोटरमें बैठकर हार्न बजाने लगा। सभी मुसाफिर जल्दी जल्दी मोटरमें चढ़ गए।

चंदनने बताया, "चुन्नू, भारी भारी सामान उठानेके लिए अब ट्रक बनते हैं। जीप गाड़ियां तो वहां भी चली जाती हैं जहां सड़क नहीं होती। लड़ाईके मैदानके लिए विशेष प्रकारकी गाड़ियां बनाई जाती हैं।"

चुन्नू चुपचाप बैठा सोच रहा था कि मोटर गाड़ियोंसे यात्रा और आवागमन कितना सरल हो गया है। जिन ऊंचे पहाड़ोंपर बैलगाड़ीका चढ़ना कठिन होता था, उन्हें मोटर कुछ ही देरमें पार कर जाती है। व्यापार, आपसके संबंध आदि इन मोटरोंके सहारे कितने बढ़ गए हैं।

तभी मोटर गाड़ी रुक गई। चुन्नूने देखा कि वे रेलवे स्टेशनके बाहर पहुंच चुके हैं। जिन मुसाफिरोंको रेलसे जाना था, वह मोटरसे उतरने लगे। चंदन और चुन्नू भी उतरे। चंदनने कुलीको सामान उठवाया और चुन्नूको उसके साथ जानेको कहा। लेकिन खुद कहां चला गया? यह बात चुन्नू नहीं जान पाया। (क्रमशः)

'मुझे अंधा बना दो'

बहुत दिन पहलेकी बात है। किसी गांवमें एक गरीब फकीर रहता था। ईमानका बड़ा पक्का था वह। गधे, बंदर और कुत्तेकी खरीद-फरोख्त ही जिंदगी बसर करनेका उसका जरिया था।

रमजानका महीना था। मुसलमानोंमें यह विश्वास प्रचलित है कि इस महीनेकी एक विशेष रातकी एक विशेष घड़ीमें खुदा सबको मुंहमांगी मुराद बख्शता है।

इसी महीनेमें एक दिन किसी दूरकी हाटसे लौटते वक्त फकीरको रास्तेमें ही रात हो गई, इसलिए उसने एक जगह पड़ाव डाल दिया।

एकाएक आधी रातको फकीरके गधेकी नींद खुल गई। उसकी नजर ऊपरकी ओर गई और उसने अपने मनमें सोचा कि यही मेरी जिंदगीका सुनहरा मौका है। इस वक्त खुदासे जो दुआ मांगूंगा वह जरूर कबूल होगी। उसने खुद एक मनचाहा वर मांगकर अपने साथी बंदर और कुत्तेको भी जगा दिया। उन्होंने भी अपने अपने मनभाए वर मांग लिये। इसके बाद उन्होंने अपने मालिक फकीरको जगाकर उसे अपने वर मांगनेकी बात बताई। उनकी बात सुनकर फकीरने उनसे कहा, "पहले तुम सब मुझे यह बताओ कि तुमने क्या क्या वर मांगे हैं। मैं खुदा से ऐसा वरदान मांगना चाहता हूं। जिसका तुम्हारे वरोंसे कोई विरोध न हो।"

गधेने कहा, "मैंने बादशाह होनेका वर मांगा है।"

बंदरने कहा, "मैंने वजीर होनेका वर मांगा है।"

कुत्ता बोला, "मैंने सेनापति होनेका वर मांगा है।"

फकीरने बड़े धैर्यसे तीनोंकी बातें सुनीं। फिर उसने आकाशकी ओर अपलक दृष्टि से देखते हुए प्रार्थना की, "ओ खुदा, इन सबकी मनोकामना पूरी होनेसे पहले मुझे अंधा बना दो, ताकि मुझे इनकी अमलदारी अपनी आंखोंसे न देखनी पड़े!"

(एक कन्नड़ लोक-कथापर आधारित)

—रेवा दास


छोटू और लंबू
अरे, लंबू, तुम इतनी सारी चिट्ठियां किसे लिख रहे हो?
दूसरे शहरों और गावों में अपने लोगों के पहचान वालों को लिख रहा हूं!
क्यों?
ताकि उन लोगों से मेल-जोल इतना ज्यादा बढ़ जाए कि हम-तुम कभी वहां मेहमान बन कर जा पहुंचे...
...और थोड़े थोड़े दिन सब के यहां रहकर अपना खर्च और खाना बचाएं!
ही, ही, ही!
एक सप्ताह बाद...
कमाल है! पोस्टमैन अपना कोई पत्र ही नहीं लाया!
कोई बात नहीं, छोटू, चलो थोड़ा पैसा और खर्च करके एक बार फिर चिट्ठियां भेजें!
हां, ठीक है!



फिर एक सप्ताह बाद...
भैया पोस्टमैन, हमारे बहुत पैसे खर्च हो गए, लेकिन तुम अभी तक एक का भी जवाब नहीं लाए!
क्या करूं?
छोटू-लंबू ने हिम्मत नहीं हारी। वे बराबर चिट्ठियां लिखते रहे। लेकिन जवाब देनेवालों ने जवाब न देने की शायद कसम खा रखी थी!
एक महीने बाद...
छोटू-लंबू, मुझे खेद है कि तुम्हारा आज भी कोई खत नहीं आया!
!
!
लंबू! मनहूस! सब तेरी वजह से हुआ! इतने सारे पैसे भी गए!
लेकिन, प्यारे छोटू, ऐसा क्यों न करें कि जवाब पाए बिना ही हम उन के मेहमान बन जाएं!
हां! यह बात ठीक है!
फिर वे बाहर जाने की तैयारी में लग गए...
सहसा उन की नजर बाहर गई...
अरे, छोटू-लंबू, तुम्हारे खत का जवाब देने से अच्छा हमने यह समझा कि क्यों न तुम्हारे यहां कुछ महीने गुजारे जाएं और जी भर के बातचीत की जाए!

मोना की नई गुड़िया १६''



शीला डौल

मोना टॉयज इण्डस्ट्रीज,

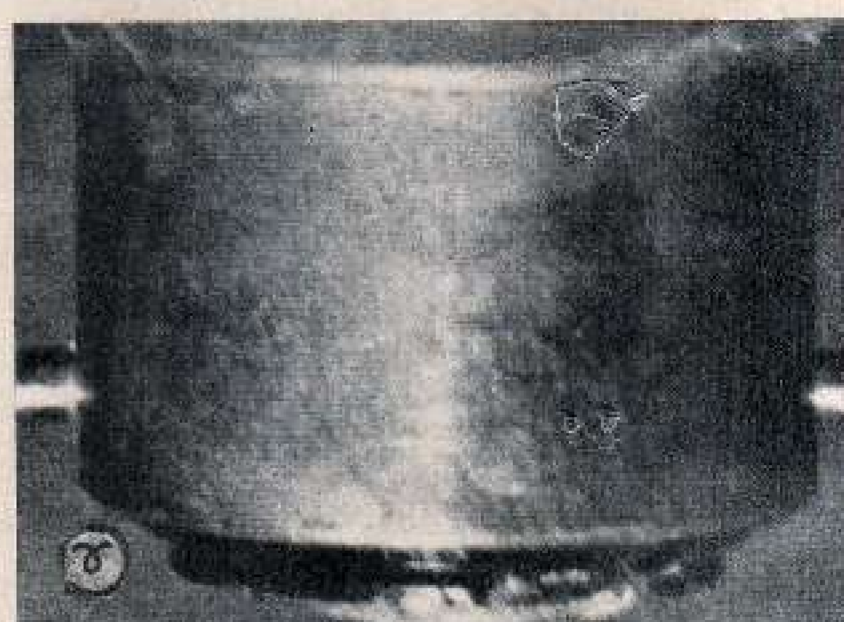
डी-३४, राजोरी गार्डन,
दिल्ली—१५
फोन : ५६६८३६

चित्र पहेलियां









बच्चो, इस चित्र-पहेलीमें फोटो कैमरेकी करामातसे अजीब अजीब आकार-प्रकारकी शक्लें दी जा रही हैं। इन शक्लोंका असली रूप क्या है? जरा पहचाननेकी कोशिश करो। यदि सफलता न मिले, तो उत्तरके लिए देखो पृष्ठ ५५।

फोटो : देवदास 'कुसुम'

धारावाही उपन्यास



बुद्धूमल के कारनामे

मूल लेखक : निकोलाई नोसोव

(परियोंके देशमें बसे एक नगरमें कुछ बौने रहा करते थे। आदमीकी तरह वे भी दो जातियोंके थे—बौने लड़के और बौनी लड़कियां। बौने लड़कोंमेंसे एक थे बुद्धूमल। इन्हीं बुद्धूमलके कुछ कारनामे तुम पढ़ चुके हो।

पिछले अंकोंमें तुमने पढ़ा था कि बुद्धूमल अपने साथियोंके साथ एक गुब्बारेमें बैठकर आसमानकी सैर कर रहे थे कि तभी गुब्बारा अचानक जमीनसे आ टकराया। नतीजा यह हुआ कि बुद्धूमल छिटककर कहीं और गिरे और बाकी साथी कहीं और। लेकिन सबकी जान बच गई। जान बचाने वाली थीं बौनी लड़कियां। बुद्धूमल बहुत जल्द उनमें हीरो बन गए और जब उन्हें पता चला कि उनके बाकी साथी भी पासके अस्पतालमें पड़े हैं, तो वह कुछ बौनी लड़कियोंके साथ वहां जा पहुंचे और किसी तरह डाक्टरनीको राजी किया कि वह उन्हें नंबरवार अस्पतालसे छुट्टी दे दे। सबसे पहले छुट्टी मिली तानप्रकाश बांसुरीवादक और कूंचीराम चित्रकारको, इसके बाद छोड़ गए मेठूमल और मोढूमल टिनसाज।

तानप्रकाश और कूंचीरामने बाहर आकर क्या किया—यह तुम पिछले अंकमें पढ़ चुके हो। अब मेठूमल और मोढूमलकी कारगुजारियां पढ़ो।)

(१७)

रपटो, झपटो, घर से निकालो रे,
दो-दो, चार-चार की लाइन बना लो रे,
लंबे-ठिगने सभी आओ और काम करो,
व्यायाम करो, व्यायाम करो, व्यायाम करो!

यह थी वह कविता जो कवि-श्रेष्ठ श्री सरगम ने बनाई थी, जिससे मेठूमल और मोढूमलने अपने दिनका आरंभ किया। अभी तक नगरकी सभी लड़कियां सो रही थीं। लेकिन मेठूमल और मोढूमलको उनके कविने सुबहसे ही कामपर लग जाना सिखाया था, इसलिए वे गाना गाते हुए सड़कपर मार्च कर रहे थे।

पहली संध्याको उन लोगोंने सुना था कि उन्हें इसलिए जल्दी निकाला जा रहा है कि वे लड़कियोंकी कार ठीक कर दें। इसलिए उन्होंने सुबह ही सुबह डाक्टरसे अपने कपड़े प्राप्त किए और बाहर निकल पड़े।

बहुत-सी लड़कियां जाग गईं कि क्या गुल-गपाड़ा मचा हुआ है। एक बाहर निकलकर आई, तो उससे उन्होंने गैरेजका पता पूछा। वह उनके साथ साथ चली, लेकिन उनका मार्च ऐसा था मानो जंगपर जा रहे हों। बड़ी मुश्किलसे उनकी लेफ्ट-राइटके साथ साथ चलकर वह एक जगह पहुंची, लेकिन मेठूमल और मोढूमल अपने मार्च-की धुनमें आगे निकल गए। उसने उन्हें रोका :

"अरे, अरे, कहां भागे जा रहे हो? गैरेज तो यहां है।"

"पीछे मुड़ो," मेठूमलने आज्ञा दी और दो आदमियोंकी वह फौज वापस लौट चली।





वहां बौनी लड़कियोंका वह अहाता था, जिसमें गैरेज था । उसे देखकर मोटूमल बोले, "यह भी कोई गैरेज है! अरे यह तो कबूतर-खाना है!"

फिर उन्होंने कारको धकेलकर बाहर निकाला और पलक मारते कारके नीचे घस गए। बहुतसी लड़कियां तब तक वहां इकट्ठी हो गई थीं । वे उन दोनोंकी ओर प्रशंसा-भरी दृष्टिसे देख रही थीं।

कारके नीचेसे आवाज आई : "हूं, टंकी चू रही है, च्‌च्‌च्‌ एक पेंच ढीला है! हूं, शरबतका पाइप फट गया है!"

थोड़ी देरमें दोनों बाहर निकल आए। एक बोला, "लाओ, जल्दीसे पेंचकस, हथौड़ा और टांकी ले आओ।"

"हमारे पास ऐसी कोई चीज नहीं है, जी।"

"नहीं है, तो फिर क्या है?"

"आरा और कुल्हाड़ा!"

"आरों और कुल्हाड़ोंसे कारोंकी मरम्मत नहीं होती। कुछ लड़के लोग इधर नहीं हैं क्या?"

लड़कियोंने बताया कि सब लड़के लोग पतंगपुरमें रहते हैं। पतंगपुरका रास्ता एक घंटे का है। मोटूमल और मेठूमल तुरंत पतंगपुरकी ओर रवाना हो गए। जाते जाते लड़कियोंको हिदायत देते गए कि जब तक वे लौटकर आएं, तब तक कुछ पुराने कपड़ोंसे कारको धो-पोंछकर साफ कर डालें, क्योंकि उन्हें गंदी कारोंकी मरम्मत करना पसंद नहीं। लड़कियोंने हामी भरी।

मोटूमल और मेठूमल गाने गाते हुए पतंग-पुरकी ओर कूच बोल गए। जब लगभग घंटा भर उन्हें सड़ककी सीधमें चलते हो गया, तो उन्हें रास्तेके बीचोंबीच एक और कार खड़ी मिली। उसके भीतर कोई नहीं था। हां, नीचेसे दो पैर बाहर निकले हुए थे।

"क्या गड़बड़ है, भई?" मोटूमलने पूछा।

"या तो शरबत काफी नहीं है, या सोडा-वाटर ज्यादा भर गया है," कारके नीचेसे आवाज आई। "क्या जाने क्या मुसीबत पैदा हो गई इसमें!"

"अच्छा तो बाहर निकलो।"

वह कारके नीचेसे घिसटता हुआ बाहर निकल आया। अब मोटूमल और मेठूमलने कारके चारों तरफ चक्कर लगा लगाकर गौरसे उसे देखना शुरू किया। इसके बाद उनमेंसे एक झपाकसे कारके नीचे घुस गया। थोड़ी देर बाद वह निकल आया, तो दूसरा घुस गया। तब तक पहला अपनी गुद्दी खुजाता रहा। कुछ देरमें दूसरा निकलकर अपनी गुद्दी खुजाने लगा और कारका मालिक उसके नीचे घुस गया। बहुत देर तक यही सिलसिला चलता रहा। जब गुद्दीने सोचा कि मोटूमल और मेठूमल उसे खुजाते खुजाते फाड़ ही डालेंगे, तो फौरन उसने भेद खोल दिया। मेठूमल को पता चल गया कि कारमें क्या गड़बड़ी थी। बस, उन्होंने पलक मारते उसे ठीक कर दिया। कारका मालिक बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने मोटूमल व मेठूमलसे जोर जोरसे हाथ मिलाया। फिर उसने उन लोगों के उधर आनेका कारण पूछा। पता लगनेपर वह बोला कि हथौड़ा और पेंचकस तो वह अपने दे सकता है, लेकिन टांकी उन्हें नलकूसे मिलेगी, जो पतंगपुरका प्लंबर है। इसलिए तीनोंके तीनों कारमें सवार हुए और कार उन्हें लेकर पतंगपुर पहुंच गई।

(१८)

यह तो तुम जानते ही हो कि पतंगपुर एक नदीके किनारे बसा हुआ है। वहां पेड़ नहीं

उगते, इसलिए वहांकी सड़कें हरागांवकी सड़कों की तरह सुंदर नहीं हैं। लेकिन फूल वहां खूब होते हैं और घर बड़े सुंदर बने हुए हैं। अधिकतर घरोंपर गुम्बद या चोटियां निकली हुई हैं। चोटियोंपर तरह तरहकी फिरकनियां या खिलौना-पवनचक्कियां हवाके जोरसे घूमा करती हैं। उनके साथ झुनझुने बंधे होते हैं, इसलिए जब वे हवासे घूमती हैं, तो वे बजते हैं और उनसे खूब शोर होता है। पतंगपुरका आकाश सदा कागज की पतंगोंसे भरा रहता है। इसी लिए इसका नाम पतंगपुर पड़ा। पतंगोंके साथ भी तरह तरह के झुनझुने बंधे होते हैं, जिनसे विचित्र प्रकारकी 'आकाशवाणी' झरती रहती है। कभी कभी उन झुनझुनोंकी तरह कागजकी लंबी लंबी पट्टियां पतंगोंके साथ बांध देते हैं। हवाके जोरसे वे मुड़ती-तुड़ती हैं या आपसमें एक-दूसरेके साथ उलझती हैं और उनसे बड़ी बेहूदा आवाजें पैदा होती रहती हैं। इस प्रकार सब मिलाकर शहरमें कान पड़ी आवाज सुनाई नहीं देती।

सब घरोंकी खिड़कियोंके दरवाजे जालीदार बने हैं। जब लड़के सड़कोंपर फुटबाल खेलते हैं, तो ये खिड़कियां बंद कर दी जाती हैं। फुटबाल उनका सबसे प्रिय खेल है। इन जालीदार खिड़कियोंका फायदा यह है कि इनसे रोशनी तो भीतर खूब आती है, पर फुटबाल नहीं आती। न जाने क्यों यहांकी फुटबालोंकी यह आदत है कि खेल खेलमें खिड़कियोंकी तरफ दौड़ पड़ती हैं!

बड़ी सड़क खत्म होनेपर कार एक बराबरवाली गलीमें घुस गई। वह एक शानदार लकड़ी के फाटकके सामने जाकर रुकी। फाटकके ऊपर एक शीशेका गोला लगाया हुआ था, जिसमें अन्य घरोंके प्रतिबिंब उल्टे लटके दिखाई पड़ते थे। कार भी उसमें उल्टी लटक गई थी।

कारका मालिक, जिसका नाम खरखरे था, उन्हें लेकर फाटकपर गया और दीवारमें लगा एक छोटा-सा बटन उसने दबाया। फाटक बिना कुछ आवाज किए चुपकेसे खुल गया। बाईं ओर सीढ़ियां चढ़कर दूसरा दरवाजा भी इसी प्रकार खुल गया।

अब इन लोगोंने अपने आपको एक ऐसे बड़े कमरेमें खड़े पाया, जहां फरशपर एक भी चीज नहीं थी। हां, दूर दीवारसे एक झूलन-खटोला बंधा हुआ था। उसपर एक बौने महाशय, नीली पोशाकमें, एक पैर दूसरे पैरपर रखे और हाथ जेबोंमें डाले आरामसे लेटे हुए थे।

"सो रहे हो अभी भी, नलकू भाई?" खरखरे ने कहा।

"सो नहीं रहा हूं," नलकू भाईने कहा, "सोच रहा हूं।"

"तो फिर इन मोड़ूमल और मेठूमलसे मिलो, ये लोग टिनसाज हैं और इन्हें टांका लगानेके लिए बिजलीकी टांकी चाहिए।"

"बड़ी खुशी हुई आप लोगोंसे मिलकर—बैठिए." नलकू भाईने कहा।

बैठें काहे पर? वहां बैठनेके लिए तो कुछ भी नहीं था। लेकिन उसी समय नलकू भाईने एक बटन दबाया और खटाक्से दीवारमेंसे निकलकर तीन आसन बाहर आ गए।

मोड़ूमल और मेठूमल बैठ गए।

"मैं अपना हर काम बटनोंसे करता हूं," नलकू भाईने कहा। "एक बटन दरवाजा खोलता है, दूसरा कुरसियोंके आसन बाहर निकाल देता है और तीसरा—ठहरो, मेज चाहिए आप लोगों को—यह लो—"

और उसने एक और बटन दबाया। एक मेजका तख्ता ऊपरसे गिरा और मोड़ूमलके सिर से टकराते टकराते बचा।

"है न आरामकी चीजें?" नलकू भाईने पूछा।

"अद्भुत!" मोड़ूमलने इधर-उधर देखते हुए कहा कि कहीं कोई और आरामदेह चीज उसके सिरपर आकर गिरने वाली तो नहीं।

"मैंने हर चीजका मशीनीकरण कर दिया है," नलकू भाईने डींग हांकी।

"लेकिन कमी है तो बस एक—कि हर चीज दीवारके साथ चिपकी हुई है," खरखरे भाईने कहा।

"ठीक है," आविष्कारक महाशय बोले। "मैं इन कुरसियोंको इधर-उधर हटानेके लिए बहुत सिर खपा चुका हूं।"

"पर साधारण कुरसियोंका इस्तेमाल किया जाए, तो क्या हरज है?" मेठूमलने सलाह दी।

"वाह! क्या बात है! क्या आइडिया है!" उछलकर नलकू भाई बोले। "अब मुझे कुछ सीधी-सादी कुरसियोंका आविष्कार करना होगा। सबसे बढ़िया आइडिए सबसे ज्यादा सीधे-सादे होते हैं। मालूम होता है कि आप दोनोंको

भी मशीनोंके काममें भारी दिलचस्पी है—है न?"

"हां, है तो," दोनोंने कहा।

"अच्छा, तो आपको टांकी चाहिए? है न?"

अब नलकू भाईने दूसरा बटन दबाया और हरेकने आश्चर्यके साथ देखा कि झूलन-खटोला धीरे धीरे नीचे बैठने लगा। यहां तक कि वह फरशसे लग गया और नलकू भाई फरशपर लेटे दिखाई पड़ने लगे। उन्होंने कारण बताया :

"देखो, साधारण खटोलेमेंसे नीचे कूदो और पैर कहीं जालमें फंसा रह जाए, तो नाक पिच्ची हो जाएगी न? मैंने इसका भी मशीनीकरण कर दिया है। अब नाक पिच्ची होनेका कोई डर नहीं। खटोला आरामसे नीचे बैठ जाता है और आप आरामसे इसपरसे उठकर चलते-फिरते नजर आते हैं। इसी तरह जब आप खटोलेमें सवार होना चाहें, तो आरामसे पहले उसमें फरश पर ही लेट जाइए। फिर बटन दबा दीजिए और वह खरामा खरामा ऊपर उठ जाएगा।"

बातें करते करते नलकू भाई जहां-तहां बटन दबाते फिरने लगे। कभी कबर्ड निकलकर बाहर आ रहा है, कभी कोई शेल्फ निकलकर जम जाता है— कभी कुछ, कभी कुछ। अंतमें उन्होंने जो एक बटन दबाया, तो फरशके बीचोंबीच एक दरवाजा नीचेकी तरफ झूल गया और नलकू भाई उसमेंसे नीचे कूद गए। थोड़ी देरमें बाहर अहातेमेंसे आवाज आई: "मित्रो, यहां चले आइए!"

तीनों बाहर निकल गए।

वह तीनोंको लेकर एक पत्थरके बने भवन की तरफ बढ़े, जिसका दरवाजा धातुका बना था। बोले, "यह मेरा गैरेज है।"

उन्होंने एक बटन दबाया और नाटकके परदे की तरह दरवाजा ऊपर उठा। गैरेजके अंदर उन लोगोंने एक विचित्र कार देखी, जिसके ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं पहिए ही पहिए लगे हुए थे। वह बोले: "यह मेरी आठ पहियों वाली गाड़ी है और पिस्तेकी आइसक्रीमसे इसका इंजिन ठंडा रखा जाता है। इसके चार पहिए ऊपर हैं और चार नीचे। आम तौरसे यह निचले चार पहियोंपर दौड़ती है। लेकिन अगर उलट जाए, तो यह ऊपरवाले पहियोंपर दौड़ने लगती है! आठों पहिए इस प्रकार लगाए गए हैं कि यह एकदम उलटनेपर ही नहीं दौड़ती, बल्कि अगर दाएं या बाएं उलट जाए, तो भी दौड़ती चली जाती है। इससे दुर्घटनाओंका भय एकदम जाता रहा।"

नलकू भाई कारमें सवार हो गए और उसे ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं उलटा कर दौड़ाते हुए दिखाया। फिर बोले :

"आम टंकीकी जगह इसमें एक बायलर है, जिसमें सोडावाटर उबाला जाता है। उससे

(शेष पृष्ठ ४२ पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स



"अरे साहब, मिलने-जुलनेसे ही दोस्ती फलती-फूलती है, लेकिन एक तुम हो कि न कभी हमें अपने यहां बुलाते हो और न कभी हमारे घर आते हो!"



"हां, यार, ठीक कहते हो। लेकिन यह तो बताओ कि हमारे यहां आओगे, तो क्या लाओगे और हमें अपने घर बुलाओगे तो क्या खिलाओगे?"



दृश्य निर्माण : सुशीला रजनी पटेल

तानसेन और

सवेरे सवेरे साधुओंकी एक मंडली राम-भजन गाती हुई एक आलीशान महलके सामनेसे गुजर रही थी।

"गाना बंद करो! तुम्हें मालूम नहीं कि शहरके इस हिस्सेमें गाना-बजाना मना है?" महलके फाटकपर खड़े संतरीने चिल्लाकर कहा।

"ना, बाबा, ना, हमें क्या मालूम? लेकिन राम-भजनपर भी पाबन्दी! ऐसा क्यों?" एक वृद्ध साधुने आगे बढ़कर पूछा।

"आजकल संगीत-सम्राट तानसेन नई नई राग-रागिनियोंकी रचना कर रहे हैं। उनके काममें बाधा न डाली जाए, बादशाहका हुक्म है। चुपचाप भाग जाओ यहांसे!" जवाब मिला।



बैजू बावरा

छाया : 'पराग' कला विभाग

लेकिन राम-भजन फिर चालू हो गया। साधु किसीकी रैयत थोड़े ही थे। आखिर गिरफ्तार कर लिये गए।

उनको कैदसे छुड़ाने आया बैजू बावरा, जिसने किसी महलमें बैठकर नहीं, प्रकृतिके खुले आंगनमें स्वरोंकी साधना की थी। लेकिन यह कोई आसान काम थोड़े ही था। शर्त थी तानसेनको संगीतमें हराना। बैजूको देखकर लोग हंसते कि बेचारेके सिरपर मौत खेल रही है।

आखिरमें शहनशाह अकबरके दरबारमें दोनोंका मुकाबला हुआ। ऊपर वाले चित्रमें इसी दृश्यको दिखाया गया है।

कहते हैं कि तानसेनको जीवनमें पहली बार बैजू बावरेके हाथों मात खानी पड़ी। गर्वका सिर झुक गया।

कहानी

विज्ञापन



इतवारका दिन था। शेख जमालुद्दीन बरामदेमें बैठे इत्मीनानसे दातौन कर रहे थे। अब्बन अखबारवाला शेख जमालुद्दीनको दैनिक 'भंडाफोड़' दे गया। शेख जमालुद्दीन-ने दातौन फेंककर जल्दी जल्दी कुल्ला किया और दैनिक 'भंडाफोड़' लेकर वहीं पड़ी चारपाई-पर जम गए।

शेख जमालुद्दीन वैसे कोई खास पढ़े-लिखे तो नहीं थे, फिर भी चिट्ठी-पत्री और अखबार बांच लेते थे। अखबार लेकर बैठते, तो सुर्खियों से लेकर विज्ञापन तक पढ़ जाते।

हां, तो उस दिन भी शेख जमालुद्दीनकी नजर एक खास विज्ञापनपर अटक गई :

अनोखा जादूभरा अविष्कार!
इसकी वजहसे आप सभीको देख सकते हैं, लेकिन आपको कोई नहीं देख सकता। मूल्य केवल पैंतीस रुपये। स्टाक सीमित है, इसलिए अपना आर्डर शीघ्र ही इस पतेपर दें—श्री मुफतलाल पापड़वाला, गंदी गली, जालंधर।

इस विज्ञापनको पढ़कर शेख जमालुद्दीन का दिल बाग बाग हो गया। वह मन ही मन सोचने लगे—मैं सभीको देख सकूंगा, लेकिन मुझे कोई नहीं देख सकेगा! अदृश्य होकर लोकनाथ हलवाईकी दूकानसे मिठाइयां उड़ा उड़ाकर वह गुलछर्रे उड़ाऊंगा कि देखने वालोंके कलेजेपर सांप लोटेंगे . . .वाह रे मुफतलाल, तुम्हारा भी जवाब नहीं!

दूसरे दिन शेख जमालुद्दीन डाकखानेमें जाकर पैंतीस रुपयेका मनीआर्डर रवाना करके अविष्कारका आर्डर दे आए और बड़ी बेसब्रीसे माल आनेका इंतजार करने लगे।

हर रोज डाकिएसे शेख जमालुद्दीन पूछते, "क्यों, भाई, कोई पार्सल तो हमारे नाम नहीं आया?" डाकिएसे नकारात्मक उत्तर पाकर वह उदास हो जाते।

•

एक दिन डाकिया एक पार्सल शेख जमालुद्दीनको दे गया। पार्सल देखते ही उन्होंने तुरंत भांप लिया कि वह मुफतलाल द्वारा भेजा हुआ पार्सल है। उन्होंने पार्सलके ऊपरका सफेद कपड़ा कैंचीसे काटा, तो बादामी गत्ते का एक डिब्बा दिखाई दिया। उसे खोलनेपर एक और डिब्बा फीतेसे बंधा हुआ निकला। फीतेको खोलकर उन्होंने डिब्बेका ढक्कन उठाया : "ऐं यह क्या? औरतोंके ओढ़नेका काला बुर्का!"

शेख जमालुद्दीनकी दशा देखने योग्य थी। सहसा उनकी निगाह एक हरे रंगके कागजपर पड़ी, जिसमें लिखा था—'इसे पहनकर आप दूसरोंको देख सकते हैं। परंतु आपको कोई नहीं देख सकता। यदि आपको इसे पहननेमें लज्जा का अनुभव हो, तो आप इस अपनी श्रीमतीजीको ही भेंट स्वरूप दे दें।'

लेकिन शेख जमालुद्दीन क्या करें? उन्हें न तो बुर्का पहनना पसंद और न ही उनकी शादी ही हुई, जिससे बुर्का उनकी पत्नीके इस्तेमालमें आ जाता।

खैर, हमने बुर्केके सदुपयोगके लिए उन्हें एक नेक सलाह दी कि वह विवाहके विज्ञापन देखा करें, परंतु उन्होंने कहा, "बाज आए विज्ञापनोंसे!"

—रामबहादुर सिंह



तब से वे दुश्मन हैं

—अन्विता अग्रवाल

बहुत पुराने समयकी बात है कि एक जंगल में मोती कुत्ता और पूसी बिल्ली रहा करते थे।

दोनोंमें बहुत गहरी छनती थी। दोनोंके घर आमने-सामने थे। शामको रोज दोनों अपना अपना काम समाप्त करके बहुत दूर दूर तक घूमने जाया करते। बिल्ली कुत्तेको मीठा गीत सुनाया करती और कुत्ता अपनी दो टांगोंपर खड़ा होकर नाचा करता। इस तरह दोनों हंस-खेलकर अपना जीवन बिता रहे थे।

उन दोनोंकी इतनी गहरी दोस्ती देखकर जंगलके अन्य जानवर उनसे ईर्ष्या किया करते थे, जिनमेंसे चिलबिली नामक एक लोमड़ी भी थी। वह सदा यह सोचा करती कि किस प्रकार इस कुत्ते और बिल्लीकी दोस्ती टूटे। आखिर उसके चालाक दिमागने उसे एक उपाय सुझा ही तो दिया।

सुबहका समय था। ठंडी हवा चल रही थी। बिल्ली मौसी चूहोंका शिकार करके घर आ रही थी कि रास्तेमें चिलबिली चाची मिल गई। बिल्ली चिलबिली चाचीको देखते ही बोली—

"कहो, चाची, क्या हालचाल हैं? आज तो तुम बड़ी उदास दिख रही हो, कोई खास बात हो गई क्या?"

चिलबिली चाची रोते हुए बोलीं—"अरे, क्या बताऊं, बेटी। मुझे तो कहते ही दुःख होता है। सोचती हूं कि दुनियामें कैसे कैसे लोग रहते हैं। अरे, भई, दुश्मनी ही करनी थी, तो पहले दोस्ती ही क्यों की थी?"

"चिलबिली चाची, तुम तो पहेलियां बुझा रही हो, साफ साफ कहो न!" बिल्ली बोली।

"अरे क्या कहूं! वह जो मोती कुत्ता है न, जो तेरे घरके सामने रहता है, आज मुझसे कहने लगा— चाची, छोटे और बड़ेकी दोस्ती भला कभी निभती है? कहां राजा भोज और कहां गंगू तेली! मुझे तो पूसीकी दोस्ती एकदम पसंद नहीं है। हर समय 'आऊं आऊं' ही करती रहती है। चाची, अब तो मैं सोच रहा हूं कि किसी न किसी तरह इस पूसीका अंत ही कर दूं।"

"क्या कह रही हो, चाची?" पूसी घबराकर बोली।

"अरे मैंने क्या कहा है! जो उसने मुझसे कहा वही मैंने तुझसे कह दिया। पर, बेटी, इसी सोचमें घुली जा रही हूं कि अगर तू न रही, तो कौन मुझे इतने प्यारसे चिलबिली चाची कहेगा?" लोमड़ीने अपनी नाकपरसे गिरती हुई ऐनकको संभालते हुए कहा।

पूसी बिल्लीके तो रोंगटे खड़े हो गए, वह बोली, "अगर उसकी यह हिम्मत है, तो ठीक है, मैं भी देख लूंगी। मैं आज ही अपना घर बदल लेती हूं। मुझे कौन-सी उसकी बोली अच्छी लगती है!"

"बेटी, जरा हिम्मतसे काम लेना। अच्छा, तो मैं चलूं। बड़ी देर हो गई है। तेरे चाचा याद कर रहे होंगे," लोमड़ी मन ही मन मुस्कराई और बोली।

जब बिल्लीसे काम निपट गया, तो चिलबिली चाची अपनी छड़ी और ऐनक संभालते हुए मोती

कुत्तेके पास पहुंची।

मोती उस समय एक पेड़के नीचे लेटा हुआ आराम कर रहा था। चाचीको देखते ही बोला—"कहो, चाची, इधर कैसे आना हुआ?"

चाची घासपर बैठती हुई बोली, "मोती, क्या कल पूसीसे तेरी अनबन हो गई थी?"

"नहीं तो! क्यों क्या बात है?" मोती बोला।

चाची हाथ नचाकर बोली, "पूसी मुझसे आज कह रही थी कि मोती तो मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता। उसका बस नाम ही मोती है, वैसे तो मिट्टीके ढेलेके बराबर भी नहीं!"

"फिर क्या हुआ, चाची?" कुत्ता उत्सुकता से बोला।

"अरे होना क्या था! पूसी बोली—आज तो मैं अपने नाखून तेज करूंगी और जब मोती सोता हुआ मिलेगा, तो उसके गलेपर ऐसा वार करूंगी कि बस फिर स्वर्गमें ही नजर आएगा।" चिलबिली चाची दुष्टतासे बोली।

"अच्छा, उस पिद्दीकी यह मजाल! मैं खुद ही उसे स्वर्ग पहुंचा देता हूं," मोती गुस्सेसे बोला।

बस, अब क्या था! चिलबिली चाचीका तो काम बन गया। वह मन ही मन अपनी सूझकी दाद देती हुई छड़ी उठाकर चल दी।

इधर कुत्ता भागते भागते अपने घर गया। पूसी बिल्लीने कुत्तेको देखा, तो लगी आंख दिखाने और गुर्राने।

बस अब तो मोतीका पारा भी सातवें आसमान पर चढ़ गया। पहले तो वह भौंका, फिर पूसी बिल्लीको मारनेके लिए उछला, पर पूसी कौन-सी कम थी। वह कूदकर पासके पेड़पर चढ़ गई और फिर वहांसे ऐसी नौ-दो-ग्यारह हुई कि उसके बाद पूसी बिल्लीको उस जंगलमें किसीने नहीं देखा।

तबसे कुत्ता हमेशा बिल्लीकी ताकमें रहता है और आज भी जब कभी उसे देख लेता है, तो खानेके लिए झपटता है। ●

नन्ही गुड़िया मेरी!



ओ पीले चंदा की किरण!
जरा धीरे से,
धीरे से उतर;
कहीं जाग नहीं जाए
यह नन्ही गुड़िया मेरी,
रानी बिटिया मेरी!

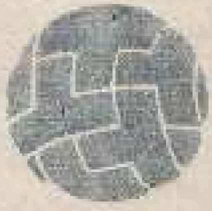
सरकी लो, चूनर वह
सलमे-सितारों की,
नींद लगी सपनों के
हारे कहारों की;
ओ नन्ही परियों की बहन!
जरा धीरे से,
धीरे से ठहर;
कहीं जाग नहीं जाए
यह नन्ही गुड़िया मेरी,
रानी बिटिया मेरी!

थमा सभी शोर,
अरे जग ने चुप्पी साधी,
जल जल के हुई देख
सारी बाती आधी;
ओ नीले अंबर की दुल्हन!
जरा धीरे से,
धीरे से संवर;
कहीं जाग नहीं जाए
यह नन्ही गुड़िया मेरी,
रानी बिटिया मेरी!

—रमेशकुमार तैलंग

खेल-कूद

फुटबाल की कहानी



हरिमोहन

('पराग' के पिछले अंकमें तुम्हें फुटबालके जन्मकी कहानी पढ़नेको मिली थी, लो, अब इस खेलके नियमोंकी जानकारी प्राप्त करो।)

(२)

दुनियाके ज्यादा देशोंमें, जिनमें भारत भी शामिल है, फुटबाल 'फुटबाल एसोसियेशन' द्वारा बनाए गए नियमोंके मुताबिक खेली जाती है। इसी लिए उसे 'एसोसियेशन फुटबाल' कहते हैं।

फुटबाल जिस मैदानपर खेली जाती है, वह आकारमें १००×५० गजसे लेकर १३०×१०० गज तक हो सकता है। मैदानके चारों कोनों पर, पांच पांच फुटकी झंडियां लगी रहती हैं (देखो सामने का नक्शा)। गोलके दोनों खंभोंके बीच आठ आठ गजका फासला रहता है। रैफरी और खिलाड़ियोंकी मददके लिए मैदानमें गोल-लाइन, साइड-लाइन, हाफवे-लाइन और सेंटर सर्किलकी लाइनें मैदानपर खड़ियासे साफ साफ अंकित की जाती हैं।

क्रिकेट और हाकीके समान, फुटबालमें भी दोनों दलोंमें ११-११ खिलाड़ी रहते हैं। हाकीकी भांति खेलके आरंभमें दोनों कप्तान 'टॉस' करके यह फैसला करते हैं कि कौनसा दल किस ओरका गोल लेगा और शुरूमें 'किक आफ' कौन करेगा? 'हाफ टाइम' के बाद गोल बदल लिये जाते हैं।

फुटबालमें ११ खिलाड़ी होते हैं: गोलकीपर, राइटबैक, लैफ्टबैक, राइट हाफ, सेंटर हाफ, लैफ्ट हाफ, आउटसाइड राइट, इनसाइड राइट, सेंटर फारवर्ड, इनसाइड लैफ्ट और आउटसाइड लैफ्ट।

'किक आफ' करने वाला खिलाड़ी गेंदको किक लगाकर उसे विपक्षी दलकी ओर भेजता है। 'किक आफ' करने वाला खिलाड़ी तब तक फुटबालको दुबारा नहीं छू सकता, जब तक कोई और खिलाड़ी उसे न छू ले।

फुटबाल संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल: 'गोल एरिया' किसे कहते हैं?

जवाब: गोल लाइनसे समकोण बनाती हुई ६ गज लंबी लाइनें और हर गोलके खंभोंसे ६ गज दूर दो लाइनें, गोल लाइनके समानांतर आती हुई एक लाइनसे जुड़कर 'गोल एरिया' बनता है।

सवाल: 'पेनल्टी एरिया' और 'पेनल्टी मार्क' क्या होता है?

जवाब: 'पेनल्टी एरिया' गोल लाइनके समानांतर आती हुई एक दूसरी लाइन और गोलके हर खंभेसे १८ गज लंबी दो लाइनोंसे जुड़कर बनता है। 'पेनल्टी मार्क' गोल लाइनके मध्य बिंदुसे १२ गजपर होता है।

सवाल: फुटबालका वजन और परिधि क्या होनी चाहिए?

जवाब: वजन, खेल शुरू होनेपर, १४ से १६ आउंस तक, और परिधि २७ से २८ इंच तक।

सवाल: 'आफ साइड' के नियम क्या हैं?

जवाब: इस नियमका सार यह है कि किसी भी खिलाड़ीको खेलके दौरान, विपक्षी दलकी गोल लाइनमें फुटबालसे आगे नहीं जाना चाहिए। रेफरी उसे तभी सजा दे सकता है, जब वह सारे खेल या विपक्षी दलके किसी खिलाड़ीके खेलमें रुकावट डाल रहा हो। या 'आफ साइड' होकर अनुचित लाभ उठा रहा हो।

सवाल: फुटबालका खेल कितने समय तक खेला जाता है?

जवाब: दूसरे देशोंमें डेढ़ घंटे तक, पर भारत में एक घंटे या अधिकसे अधिक ७० मिनट तक।

कुत्तेके पास पहुंची।

मोती उस समय एक पेड़के नीचे लेटा हुआ आराम कर रहा था। चाचीको देखते ही बोला—"कहो, चाची, इधर कैसे आना हुआ?"

चाची घासपर बैठती हुई बोली, "मोती, क्या कल पूसीसे तेरी अनबन हो गई थी?"

"नहीं तो! क्यों क्या बात है?" मोती बोला।

चाची हाथ नचाकर बोली, "पूसी मुझसे आज कह रही थी कि मोती तो मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता। उसका बस नाम ही मोती है, वैसे तो मिट्टीके ढेलेके बराबर भी नहीं!"

"फिर क्या हुआ, चाची?" कुत्ता उत्सुकता से बोला।

"अरे होना क्या था! पूसी बोली—आज तो मैं अपने नाखून तेज करूंगी और जब मोती सोता हुआ मिलेगा, तो उसके गलेपर ऐसा वार करूंगी कि बस फिर स्वर्गमें ही नजर आएगा।" चिल-बिली चाची दुष्टतासे बोली।

"अच्छा, उस पिद्दीकी यह मजाल! मैं खुद ही उसे स्वर्ग पहुंचा देता हूं," मोती गुस्सेसे बोला।

बस, अब क्या था! चिलबिली चाचीका तो काम बन गया। वह मन ही मन अपनी सूझकी दाद देती हुई छड़ी उठाकर चल दी।

इधर कुत्ता भागते भागते अपने घर गया। पूसी बिल्लीने कुत्तेको देखा, तो लगी आंख दिखाने और गुर्राने।

बस अब तो मोतीका पारा भी सातवें आस-मान पर चढ़ गया। पहले तो वह भौंका, फिर पूसी बिल्लीको मारनेके लिए उछला, पर पूसी कौन-सी कम थी। वह कूदकर पासके पेड़पर चढ़ गई और फिर वहांसे ऐसी नौ-दो-ग्यारह हुई कि उसके बाद पूसी बिल्लीको उस जंगलमें किसीने नहीं देखा।

तबसे कुत्ता हमेशा बिल्लीकी ताकमें रहता है और आज भी जब कभी उसे देख लेता है, तो खानेके लिए झपटता है। ●

नन्ही गुड़िया मेरी!



ओ पीले चंदा की किरण!
जरा धीरे से,
धीरे से उतर;
कहीं जाग नहीं जाए
यह नन्ही गुड़िया मेरी,
रानी बिटिया मेरी!

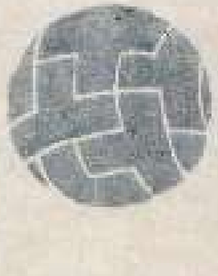
सरकी लो, चूनर वह
सलमे-सितारों की,
नींव लगी सपनों के
हारे कहारों की;
ओ नन्ही परियों की बहन!
जरा धीरे से,
धीरे से ठहर;
कहीं जाग नहीं जाए
यह नन्ही गुड़िया मेरी,
रानी बिटिया मेरी!

थमा सभी शोर,
अरे जग ने चुप्पी साधी,
जल जल के हुई देख
सारी बाती आधी;
ओ नीले अंबर की दुल्हन!
जरा धीरे से,
धीरे से संवर;
कहीं जाग नहीं जाए
यह नन्ही गुड़िया मेरी,
रानी बिटिया मेरी!

—रमेशकुमार तैलंग

खेल-कूद

फुटबाल की कहानी



('पराग'के पिछले अंकमें तुम्हें फुटबालके जन्मकी कहानी पढ़नेको मिली थी, लो, अब इस खेलके नियमोंकी जानकारी प्राप्त करो।)

(२)

दुनियाके ज्यादा देशोंमें, जिनमें भारत भी शामिल है, फुटबाल 'फुटबाल एसोसियेशन' द्वारा बनाए गए नियमोंके मुताबिक खेली जाती है। इसी लिए उसे 'एसोसियेशन फुटबाल' कहते हैं।

फुटबाल जिस मैदानपर खेली जाती है, वह आकारमें १००×५० गजसे लेकर १३०×१०० गजतक हो सकता है। मैदानके चारों कोनों पर, पांच पांच फुटकी झंडियां लगी रहती हैं (देखो सामने का नक्शा)। गोलके दोनों खंभोंके बीच आठ आठ गजका फासला रहता है। रैफरी और खिलाड़ियोंकी मददके लिए मैदानमें गोल-लाइन, साइड-लाइन, हाफवे-लाइन और सेंटर सर्किलकी लाइनें मैदानपर खड़ियासे साफ साफ अंकित की जाती हैं।

क्रिकेट और हाकीके समान, फुटबालमें भी

हरिमोहन

दोनों दलोंमें ११–११ खिलाड़ी रहते हैं। हाकीकी भांति खेलके आरंभमें दोनों कप्तान 'टॉस' करके यह फैसला करते हैं कि कौनसा दल किस ओरका गोल लेगा और शुरूमें 'किक आफ' कौन करेगा? 'हाफ टाइम' के बाद गोल बदल लिये जाते हैं।

फुटबालमें ११ खिलाड़ी होते हैं: गोलकीपर, राइटबैक, लेफ्टबैक, राइट हाफ, सेंटर हाफ, लैफ्ट हाफ, आउटसाइड राइट, इनसाइड राइट, सेंटर फारवर्ड, इनसाइड लैफ्ट और आउटसाइड लैफ्ट।

'किक आफ' करने वाला खिलाड़ी गेंदको किक लगाकर उसे विपक्षी दलकी ओर भेजता है। 'किक आफ' करने वाला खिलाड़ी तब तक फुटबालको दुबारा नहीं छू सकता, जब तक कोई और खिलाड़ी उसे न छू ले।

फुटबाल संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल: 'गोल एरिया' किसे कहते हैं?

जवाब: गोल लाइनसे समकोण बनाती हुई ६ गज लंबी लाइनें और हर गोलके खंभोंसे ६ गज दूर दो लाइनें, गोल लाइनके समानांतर आती हुई एक लाइनसे जुड़कर 'गोल एरिया' बनता है।

सवाल: 'पेन्लटी एरिया' और पेन्लटी मार्क' क्या होता है?

जवाब: 'पेन्लटी एरिया' गोल लाइनके समानांतर आती हुई एक दूसरी लाइन और गोलके हर खंभेसे १८ गज लंबी दो लाइनोंसे जुड़कर बनता है। 'पेन्लटी मार्क' गोल लाइनके मध्य बिंदुसे १२ गजपर होता है।

सवाल: फुटबालका वजन और परिधि क्या होनी चाहिए?

जवाब: वजन, खेल शुरू होनेपर, १४ से १६ आउंस तक, और परिधि २७ से २८ इंच तक।

सवाल: 'आफ साइड' के नियम क्या हैं?

जवाब: इस नियमका सार यह है कि किसी भी खिलाड़ीको खेलके दौरान, विपक्षी दलकी गोललाइनमें फुटबालसे आगे नहीं जाना चाहिए। रैफरी उसे तभी सजा दे सकता है, जब वह सारे खेल या विपक्षी दलके किसी खिलाड़ीके खेलमें रुकावट डाल रहा हो। या 'आफ साइड' होकर अनुचित लाभ उठा रहा हो।

सवाल: फुटबालका खेल कितने समय तक खेला जाता है?

जवाब: दूसरे देशोंमें डेढ़ घंटे तक, पर भारत में एक घंटे या अधिकसे अधिक ७० मिनट तक।

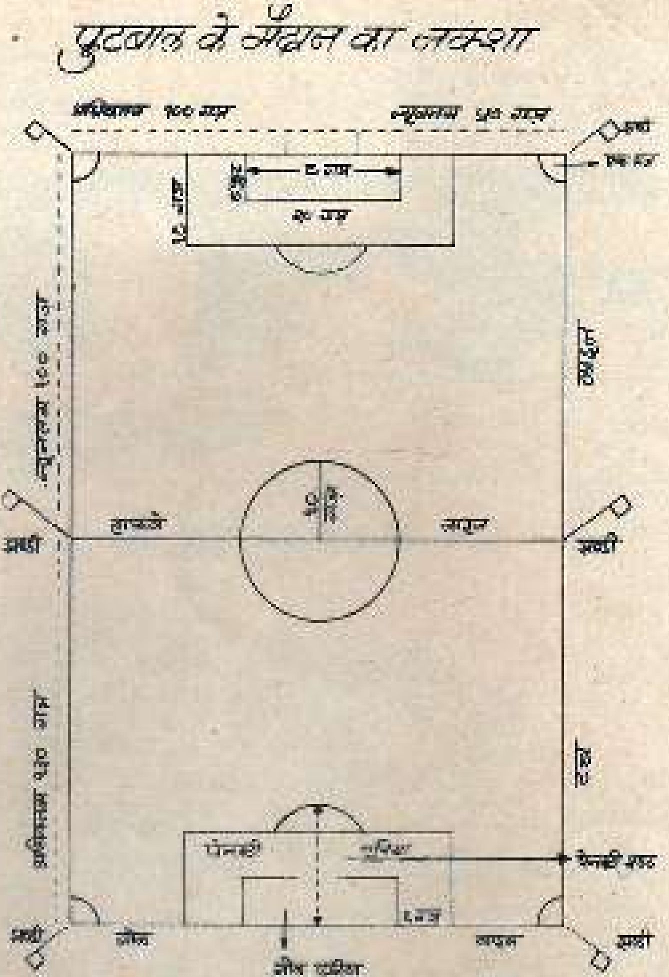
गोल तब होता है, जब कोई खिलाड़ी विपक्षी गोलमें गेंद भेजनेमें सफल हो जाता है। गोल होनेके बाद हारे हुए दलका कोई खिलाड़ी किक आफ करता है और गोल न हो, तो मध्यांतरके बाद वह दल जिसे आरंभमें 'किक आफ' करनेका मौका नहीं मिला था।

गोलके लिए सारी फुटबालका गोलके खंभोंके बीचसे गुजरकर क्रॉस बारके नीचे पहुंचना जरूरी है, जो गोलके खंभोंके सहारे टिका रहता है।

जब सारीकी सारी फुटबाल 'साइड' या 'गोल-लाइन' से बाहर हो जाए, तो उसे 'खेल से बाहर होना' कहा जाता है। ऐसी हालतमें जिस खिलाड़ीने पहली बार फुटबालको छुआ था, उसके विरुद्ध दलका खिलाड़ी अपने पांव 'साइड लाइन' या उससे बाहर रखकर फुटबालको दोनों हाथों से सिरके ऊपर फेंकता है।

जब कोई खिलाड़ी अपने विपक्षी दलके गोलके ऊपर गेंदको उछाल देता है, तो बचाव करने वाले दलके खिलाड़ीको 'गोल किक' करनेका मौका मिल जाता है। यह किक उस स्थानके पाससे किया जाता है, जहांसे गेंद मैदानके बाहर गई थी। 'किक आफ' करने वाले खिलाड़ीके समान, 'गोल किक' करने वाला खिलाड़ी भी तब तक गेंदको नहीं छू सकता, जब तक कोई और खिलाड़ी उसे छू न ले। अगर गेंद बचाव करने वाले दलके किसी खिलाड़ीसे खुद उसकी ही गोल-लाइनके ऊपरसे गोलके बाहर चली जाए, तो विपक्षी दलका खिलाड़ी पाससे कोनेकी झंडीके 'क्वार्टर सर्किल' तक गेंदको किक करके सीधे गोल कर सकता है।

किसी खिलाड़ीके नियमविरुद्ध या खतरनाक खेल खेलनेपर विपक्षी दलको फ्री किक (डायरेक्ट या इनडायरेक्ट) दिए जाते हैं। 'डायरेक्ट फ्री किक' में किक करने वाला खिलाड़ी खुद गोल कर सकता है। 'इनडायरेक्ट फ्री किक' में यह जरूरी है कि गोल होनेसे पहले गेंदको किक करने वाले खिलाड़ीके अलावा कोई और उसे



छुए। विपक्षी दलके खिलाड़ीको, यदि वह 'गोल-लाइन' पर नहीं खड़ा है, तो गेंदसे १० गजकी दूरीपर ही रहना चाहिए। 'डायरेक्ट फ्री किक' उसी जगहसे लिया जाता है, जहांसे नियम विरुद्ध खेलकी शुरुआत हुई थी।

जब बचाव करने वाले दलका कोई खिलाड़ी 'पेनल्टी एरिया' में जानबूझकर खतरनाक या नियम विरुद्ध खेल खेले, तो विपक्षी दलको 'पेनल्टी किक' मिल जाता है। इसमें केवल बचाव करने वाले दलका गोलकीपर ही गोलका बचाव करता है। किक करने वाला खिलाड़ी, उस समय तक दुबारा किक नहीं कर सकता, जब तक कोई और खिलाड़ी उसे न छू ले।

अगले अंकमें हम तुम्हें बताएंगे कि किस प्रकार तुम अपनी टीमके खिलाड़ियोंके साथ मिलकर योजनानुसार खेल खेलकर विपक्षी दलको चक्कर में डाल सकते हो। (क्रमशः)

कहानी



ऐनक पढ़ी-लिखी

एक था जाटोंका गांव। पूरेके पूरे गांवमें निरक्षर भट्टाचार्य जाट रहते थे। उसी गांवमें एक सौदान नामका जाट भी रहता था—सीधा-सादा, भोला-भाला। सौदान जाटकी बड़ी इच्छा थी कि वह पढ़े-लिखे और गांवके लोगोंका भला करे। वह पढ़ने-लिखनेकी कोशिश करता, पुस्तक हाथमें लेकर उल्टी-सीधी करके देखता, एक एक अक्षरपर दृष्टि गड़ाता, परंतु उसकी समझमें खाक न आता। सौदानको जब कोई पुस्तक पढ़ता हुआ दिखाई देता, तो वह बड़ा आश्चर्य करता: "हाय, दैया...ये कैसे पढ़ि लेवै हैं?" परंतु बेचारेके लिए यह सब काला अक्षर भैंस बराबर था।

एक बार सौदानके गांवमें एक कथावाचक पंडितजी आए। गांववालोंने रातके समय पंडितजीको एक लंबी-चौड़ी चौपालपर बिठा दिया और कथा प्रारंभ हो गई। पंडितजी अपनी आंखोंपर ऐनक लगाकर 'रामायण' पढ़ा करते थे, जिसे देखकर सौदानको बहुत ही आश्चर्य होता। सौदानका सारा ध्यान पंडितजीकी पढ़नेकी कलाकी ओर ही केंद्रित रहता। कथाके दो-चार दिन बाद ही उसने यह जान लिया था कि हो न हो यह रामायण पढ़नेकी सारी करामात इस ऐनककी है, क्योंकि जब पंडितजी रामायण पढ़ते हैं, तभी आंखोंपर ऐनक लगा लेते हैं, और जब किसीसे बातें करते हैं, तो उसे आंखोंसे उतार लेते हैं। इसलिए अब सौदानको यह पूरा विश्वास हो चुका था कि पंडितजी कतई पढ़े-लिखे नहीं हैं, बल्कि उनकी ऐनक पढ़ी-लिखी है यानी पढ़ती है ऐनक और बोलते हैं पंडितजी! यही सोचकर सौदानने पंडितजीसे पूछा:

"पंडितजी, बिना ऐनकके कथा बाचि कै दिखाओ।" पंडितजीने कहा, "नहीं, भाई, यह मेरी पढ़नेकी ऐनक है, बिना इसके मैं कुछ भी नहीं पढ़ सकता।"

बस अब तो उसे यह पूरा भरोसा हो गया कि ऐनक ही पढ़ी-लिखी है, पंडितजी नहीं। फिर क्या था! उसने सोचा वह भी शहर जाकर अपने लिए एक पढ़ी-लिखी ऐनक लाएगा और सबको ऐनककी सहायतासे अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़कर सुनाया करेगा।

कथा समाप्त हुई और सौदान पढ़ी-लिखी ऐनक लेने शहर जा पहुंचा। सीधा एक ऐनक-वालेकी दूकानपर जाकर बोला, "भैया, हमकूं एक किताब बांचबेकी ऐनक दो!" बस, दूकान-दारने ऐनकें दिखाना शुरू कर दीं। पहली ऐनक दूकानदारने सौदानकी आंखपर रखते हुए पूछा, "कहिए, कैसा दीखता है?"

"कछु ना दीख्यै अभी, दूसरी लाओ।"

दूकानदारने दूसरी ऐनक लगाते हुए पूछा, "अब पढ़ सकते हो?"

"ना दीख्यै भैया!" सौदानने फिर कहा।

इसी प्रकार दूकानदारने बीसियों ऐनकें सौदानको दिखा डालीं और प्रत्येकके लिए सौदान यही कहता रहा, "अभी ना दीख्यै, अभी ना पढ़ै और लाओ...।" तब दूकानदारने सोचा, शायद यह अंगरेजी जानता हो, इसलिए पूछा, "क्या अंगरेजीकी पुस्तक लाऊं?"

"हां लाओ, भैया, पर किताब बांचबे बारी अच्छी ऐनक ही लेना चाहूं," सौदान बोला।

दूकानदारने सौदानके हाथमें अंगरेजीकी पुस्तक देकर बीसियों ऐनकें दिखा डालीं, परंतु "अभी ना दीख्यै..." अथवा "अभी ना पढ़ै" सौदान कहता रहा। अब दूकानदारने सोचा कि उर्दू या अन्य किसी भाषाकी पुस्तक दिखानी चाहिए और उसने नई नई ऐनकोंके साथ उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगला, कन्नड़, तेलुगु आदिकी कई पुस्तकें दिखा डालीं, परंतु सब बेकार रहा। दूकानदारको बड़ा आश्चर्य था कि न मालूम इसे किस नंबरके शीशोंकी ऐनक फिट बैठे। आखिर तंग आकर उसने पूछा, "आखिर, आप कुछ पढ़े-लिखे भी हैं या नहीं?"

"अगर मैं पढ़या-लिख्या ही होता, तो फिर पढ़ी-लिखी ऐनक ही काहेको मांगता? मुझे तो फटाफट किताब पढ़ने वाली ऐनक चहिए।" यह सुनकर दूकानदारके पेटमें हंसते हंसते बल पड़ गए और सौदान बेचारा अपना-सा मुंह लेकर गांव लौट आया।

—'सत्य' जैसवाल

पिटाई पैटन टैंकों की (पृष्ठ ५ से आगे)

तीसरे टैंकपर लगा और उसमेंसे भी आगकी लपटें निकलने लगीं। अब चौथा गोला चौथे टैंकपर था, जो आग बरसाता हुआ आगे बढ़ता चला आ रहा था। उसपर भी एक गोला पड़ा और उसकी चेनका पट्टा बिखर गया, लेकिन तबतक एक गोला हमारे इस जवानकी पीठपर आकर लगा। वह गिर पड़ा और जोरसे चिल्लाया --'साथियो, आगे बढ़ो!' और वीरगतिको प्राप्त हो गया। इस वीरने, जिसे मरणोपरांत परमवीर चक्रसे भारत सरकारने विभूषित किया है, चार पाकिस्तानी पैटन टैंकोंको बेकार कर दिया।

●

भारतीय सेना डेराबाबा नानककी ओर आगे बढ़ रही थी, उसी समय सामनेसे दुश्मनोंका एक पैटन टैंक आग भरे गोले बरसाता हुआ हमारे जवानोंको कुचलनेके लिए आगे बढ़ रहा था। तभी हमारा एक वीर जवान नाइक मोहिन्दर सिंह आगे बढ़ा और कूदकर पैटन टैंकके पीछेसे ऊपर चढ़ गया। हाथका हथगोला उसने टैंकके इंजनपर जोरसे दे मारा। गोलेके विस्फोटसे उसका एक हाथ उड़ गया, लेकिन उसे खुशी है कि उसने उस पैटन टैंकको बर्बाद कर दिया और चार दुश्मनोंको, जो टैंक चला रहे थे, मार दिया!

●

स्यालकोट क्षेत्रमें जब हमारी सेना आगे बढ़ रही थी, तो दुश्मनने हमें घेरनेकी कोशिश की। नायब रिसालदार अयूबखांको हुक्म मिला कि पीछे मुड़कर दुश्मनको रोको। अयूबखां पीछेकी ओर मुड़ा और दुश्मनके टैंकोंके करीब पहुंच गया। अयूबखां के शब्दोंमें—'हमारी स्थिति बड़ी नाजुक थी, किंतु पलक मारते ही सब कुछ हो गया। हमने दनादन एक साथ दुश्मनके चार टैंकोंको नष्ट कर दिया। और दो टैंक कब्जेमें ले लिये!'

●

बुद्धूमल के कारनामे (पृष्ठ ३१ से आगे)

बनने वाली भाप पिस्टनोंपर दबाव डालती है, जिससे यह साधारण कारोंकी बनिस्बत ज्यादा तेजीके साथ दौड़ सकती है। इस बायलरके पीछे पिस्तेकी आइसक्रीम बनानेका फ्रीजर है, जो इंजन के सिलिंडरोंको ठंडा करती रहती है। पिघली हुई आइसक्रीम एक टंकीमें इकट्ठी होती रहती है, जिससे इंजिनके तेलका काम निकलता है। कार चार गतियोंपर दौड़ती है—पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी। इसके साथ साथ यह आगे-पीछे और बाएं-दाएं भी दौड़ सकती है। कारके पिछले हिस्सेमें कपड़े धोनेकी मशीन है। चारों गतियोंमें से किसी भी गतिपर कार दौड़ रही हो, कपड़े बराबर धोए जा सकते हैं। जब यह अचल खड़ी रहती है, तो इससे लकड़ियां काटी जा सकती हैं, मिट्टी गूंधी जा सकती है, ईंटें बनाई जा सकती हैं और आलू छीले जा सकते हैं!"

जब नलकू भाईके इन मित्रोंने आंखें फाड़ फाड़कर सब-कुछ देख लिया, तो वह उन्हें अपने कारखानेमें ले गए। वहां पूरा भानमतीका पिटारा खुला पड़ा था—पुरानी बाइसिकलें, टूटी हुई तिपहिया साइकिलें, स्कूटरों, वैगनों आदिके पुरजे और छतें और दूसरी बहुतसी ऊटपटांग चीजें। बहुत देर तक वह उस कबाड़खानेमें टांकी ढूंढ़ते रहे, लेकिन वह नहीं मिलनी थी, नहीं मिली। अंतमें सहसा ही वह माथेपर हाथ मारकर बोले: "ओह! मैं तो भूल ही गया था। वह तो रोशनाईराम 'रोशन' के यहां रह गई थी।"

"कोई परवाह नहीं," खरखरे भाईने कहा, "मैं अपनी कारमें इन लोगोंको तड़ाक्‌फड़ाक्‌ वहां ले जाता हूं।"

जब तीनों मित्र नलकू भाईसे छुट्टी लेकर फाटक पार कर रहे थे, तो मोटूमलने पूछा, "यह श्री रोशनाईराम 'रोशन' कौन साहब हैं?"

"एक लेखक हैं," खरखरे भाईने उत्तर दिया।

"सच!" खशीसे उछलकर मेंठूमलने कहा—"क्या सौभाग्य है हम लोगोंका भी! मैं न जाने कबसे एक जीवित लेखकसे मिलना चाहता था।"

"तो फिर आज मिल लो—श्री रोशनाईराम 'रोशन' बड़े मजेदार आदमी हैं।"

तीनों कारमें सवार हुए और लेखक महोदय के घरकी तरफ बढ़ चले। (क्रमशः)

(रूपांतरकार: विनोदकुमार)

हास्य कहानी

घरेलू टाइम्स



—शाहिदा परवीन

इतवारके दिन जब मम्मी, पापा और दीदी दोपहरको कहीं जाने लगे, तो टिंगू, टिल्लू व पोंगूको बुलाकर घरका ध्यान रखनेकी ताकीद करते गए। बच्चे पहले तो उदास हुए, लेकिन उनकी मित्र-मंडलीके आ पहुंचनेसे सारे घर पर एकमात्र उनका ही आधिपत्य हो गया था। बस मौज ही मौज थी। और दिनों तो दीदी डांटकर उन्हें लॉनपर खेलनेके लिए भगा दिया करती थी, परंतु आज तो बात ही और थी। सबने राय दी कि आज कोई नए ढंगका खेल खेला जाए। वैसे तो कई खेल खेलनेकी सलाहें दी गईं और नापसंद की गईं, पर अंतमें पोंगू, जो पढ़नेमें बहुत ध्यान लगाता था और इसी साल कक्षाके पचास लड़कोंमें उंचासवां आया था, उचककर बोला, "आजकल अखबारोंकी दुनिया ही निराली है, इसलिए हम अखबार छापेंगे।" यह प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास किया गया। बस तुरंत संपादक, सह संपादक, संवाददाता, क्लर्क और टाइपिस्ट नियुक्त किए गए। पापाके कमरेसे कागज, पेंसिल, स्याही, कलम, रबर, आलपिनें आदि चुराई गईं और अखबार छपना शुरू हुआ। गुड्डू जो काफी अच्छा टाइप कर लेता था और अपने भाईका टाइपराइटर कई बार बिगाड़ चुका था, फौरन दूसरे कमरेमें टाइप करने बैठ गया। धड़ाधड़ अखबार छपने लगा।

बच्चोंके इस अखबारमें किस तरहकी खबरें छापी गईं उसके कुछ नमूने दिए जा रहे हैं:

चायदानीकी हत्या, अपराधी फरार!

डाइनिंग रूम, १ अगस्त।

विश्वस्त सूत्रोंसे ज्ञात हुआ है कि डाइनिंग रूमकी अलमारी नं. ३ में श्रीमती मम्मीकी चायदानीकी निर्मम हत्या कर दी गई है। अपराधी लापता है। पुलिस खोजमें है।

श्रीमती मम्मीका बयान है कि कल शनिवार दिनांक ३१-७-६५को दोपहरके दो बजे जब किसी छनाकेकी आवाज से उनकी नींद टूटी, तो वह भागी हुई डाइनिंग रूममें पहुंचीं। वहां कमरेके बीचोंबीच उनके ६५ रुपयोंवाले टी सेटकी चायदानी कई टुकड़ोंमें पड़ी थी। श्रीमती मम्मी यह आघात सहन न कर सकनेके कारण घटनास्थलपर ही बेहोश हो गई थीं।

घरपर श्री डैडीकी अनुपस्थितिका पूरा पूरा फायदा अपराधी द्वारा उठाया गया, जो अब फरार है। पुलिस द्वारा इस मामलेकी जांचका काम स्थानीय सी. आई. डी. विभागको सौंप दिया गया है। आशा की जाती है कि अपराधी शीघ्र पकड़ा जाएगा।

अकेले बालक के साथ अज्ञात व्यक्तियों द्वारा दुर्व्यवहार

बगीचा, १ अगस्त।

हमारे विशेष संवाददाता द्वारा समाचार मिला है कि बगीचेसे चीखने-चिल्लानेकी आवाजें आनेपर जब कुछ लोग वहां पहुंचे, तो पाया कि दो वर्षीय नन्हेको पांच व्यक्ति तंग कर रहे थे। लोगोंको देखते ही अपराधी, जिनकी ऊंचाई तीनसे साढ़े चार फुट तक रही होगी, भाग खड़े हुए। मुन्नेके गालोंपर स्याहीसे सनी अंगुलियोंके निशान पाए गए। इस घटनासे नन्हा इतना भयभीत हो गया कि उसकी जबान बंद हो गई है और वह बयान देनेमें असमर्थ है। नगरके प्रमुख डाक्टर इलाज कर रहे हैं। पुलिस द्वारा उंगलियोंके निशानोंके आधारपर अपराधियों की तलाश जारी है।

श्री पप्पा को धमकी भरा पत्र

रीडिंग रूम, १ अगस्त।

कल जब श्री पप्पा, जो खुद पुलिसके डी. आई. जी. हैं, अपने रीडिंग रूममें बैठे सुबहकी डाक देख रहे थे, तो एक पत्र देखकर उनके पैरों तलेसे जमीन खिसक गई।

पत्र उन्होंने पुलिसके हवाले कर दिया है। पत्र इस प्रकार है:

'आपको आगाह किया जाता है कि शाम होनेसे पहले पहले छतपर स्थित टंकीपर ५ रुपयेका नोट रख दीजिए। यदि आपने ऐसा नहीं किया, तो आपका सिगार केस कलका सूरज नहीं देख सकेगा। खैर चाहते हैं, तो पुलिस को खबर करनेकी गलती न करें। —कुछ अज्ञात व्यक्ति।'

इस पत्रसे नगरमें हलचल मची हुई है और धनी-वर्ग के लोग डरके मारे थरथर कांप रहे हैं। ●

छोटे चित्रकार



चैकोस्लावेकियाके राजदूत डा. रोहल इल्कीवसे पुरस्कार प्राप्त करती हुई अनिला

कुमारी अनिला

एक दिन दिल्लीकी एक धनी बस्तीवाले मुहल्लेमें एक शानदार चमचमाती लीमोशीन कार आकर रुक गई। 'पों-पों पों-पों' हार्न बजा। हल्के आसमानी रंगका चुस्त फ्राक पहने बालोंकी सुंदर पोनी टेल बनाए एक बारह वर्षकी सुंदर बालिका स्थिर कदमोंसे नीचे उतरी। उसके होंठोंपर स्वाभाविक मुसकान खेल रही थी। उसे देखते ही कारके पीछे बैठा एक अधेड़ रोबदार व्यक्ति बाहर आ गया। शोफरने तुरंत दरवाजा खोल दिया। वह बालिका कारमें जा बैठी। उसके साथ उसकी बड़ी बहन तथा भाई भी थे। मुहल्लेवालोंकी उत्सुक आंखें उसकी ओर देख रही थीं। घर्रर्की आवाजके साथ कार स्टार्ट हुई और हवामें फिसलती हुई आंखोंसे ओझल हो गई।

कार उन्हें दूर, बहुत दूर ले गई और एक विशाल भवनके पोर्टिकोमें जाकर ठहर गई। वहां एक छोटी-मोटी भीड़ जमा थी। जिनमें फोटोग्राफर, पत्रकार तथा निमंत्रित अभ्यागतों का पूरा समूह था। शोफरने फुर्तीसे उतरकर दरवाजा खोल दिया। बालिका मुस्कराती हुई उतरी। एक बालिकाने लपककर उसके हाथोंमें गुलदस्ता थमा दिया। तभी एक प्रभावशाली व्यक्तिने उस बालिकाका बड़े स्नेहसे हाथ पकड़ा और उसे एक सजे हुए लॉनकी ओर ले गए।

लगता है मानो यह सब कोई तिलिस्म हो, कोई जासूसी कथा हो। लेकिन सब सच है। यह बात है २६ मार्च १९६५ की, जब बारह वर्षकी अनिला खन्नाको उसके चित्र 'सब्जीवाला' पर चैकोस्लावेकियाके भारत स्थित राजदूत डा० रोहल इल्कीवने पुरस्कार दिया था। यह पुरस्कार अनिलाको पिछले वर्ष नवंबर में चैकोस्लावेकियाकी राजधानी प्रागमें आयोजित अंतरराष्ट्रीय बालकला प्रदर्शनीमें अपने वर्गके चित्रोंमें सर्वप्रथम होनेपर प्राप्त हुआ था। विशेष बात तो यह है कि इस प्रदर्शनीमें ५६ देशों

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

पुरस्कृत चित्र 'सब्जीवाला'



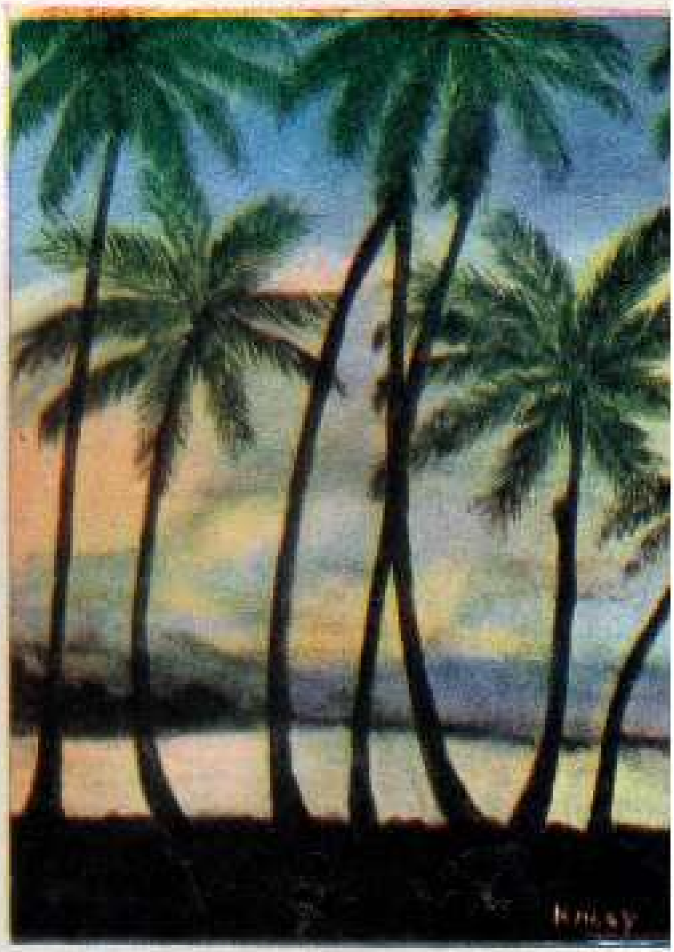
बड़े पुरस्कार

कुमारी कलसी

कुमारी कलसीका पूरा नाम नवजोत कलसी है। इस समय उसकी आयु १५ वर्ष है। बचपनसे ही उसे चित्रकलासे लगाव रहा है। पिछले वर्षोंमें वह मेरठ नगरमें होने वाली कई चित्रकला प्रतियोगिताओंमें पुरस्कार जीत चुकी है। दर्शकोंने उसके चित्रोंकी मुक्त कंठसे प्रशंसा की थी।

उसे गुड़ियोंसे खेलना, पेंटिंग करना, पत्र-मित्र बनाना बहुत पसंद है लेकिन अपनी पढ़ाई का काम भी वह बड़ी रुचि और तन्मयतासे करती है। यही कारण है कि वह घरभरकी दुलारी और अध्यापिकाओंकी स्नेहभाजन है। उसकी कामना है कि आगे चलकर वह एक सफल चित्रकार बने।

यहां उसके दो चित्र छापे जा रहे हैं।



● खजूरोंके वृक्षोंमेंसे झांकता रंगीन आसमान

बाजार की गहमागहमी



में था और नन्ही ।

आज मैं पूरी तरह आजाद था। मेरे कामोंमें कोई हस्तक्षेप करने वाला न था। आज मुझमें एक गजबकी फुर्ती भी आ गई थी। सुबह ही उठ गया था। और दिन मां दस बार जाकर उठाती, तो कहीं जाकर मैं बिछावनसे उठता था। बस, इसी कारणसे सभी डांटने लगते—माता-पिता, भैया-दीदी सभी। आज उठते ही चाय पीनेकी बात मनमें आई। और दिनकी तरह आज भी चाय पीनेको जी ललचा रहा था। चायका सारा सामान रसोईमें होगा, पर मां नहीं है। अब बनाए कौन? नन्ही अलग चायके लिए रो रही थी। बार बार कहती थी—'भाई साहब चाय पीऊंगी। चाय, भाई साहब।'

'मुझे तो घरका कुछ भी मालूम नहीं, तुम्हें मालूम है कि चाय और चीनी किधर रखी है?'

'मालूम है—डिब्बेमें है न,' नन्हीने कहा।

'और डिब्बा कहां है?'

'डिब्बा है अलमारीमें।'

'और अलमारी बंद है!' मैंने कहा।

तब तक घरकी नौकरानी भी आ गई। उसने अलमारी खोल दी। आज पहली बार नन्हीकी मासूम आंखोंने खुद चाय बनानेको मजबूर कर दिया। चाय बनाकर हम दोनोंने पी। ऊपरसे हम लोगोंने दूध भी पी लिया। दूध पीकर मैं खेलने चला गया।

खेलते खेलते काफी समय बीत गया। आज न माता-पिताके उपदेशका डर था और न स्कूलके कामका। मैं निडर होकर खेलमें मगन था।

इतनेमें नन्हीकी चीख सुनाई पड़ी। मैं घरकी ओर दौड़ पड़ा। पहुंचकर क्या देखता हूं कि नन्हीके हाथसे खून बह रहा है। और वह सहमी सहमी-सी खड़ी हिचकियां लेकर रो रही है। आज ठीक मेरी जैसी हालत उसकी थी। माता-पिताके सामने ऐसी गलतीपर जैसे मैं डर जाता था, ठीक उसी प्रकार वह डरी और सहमी हुई थी। मैं उससे कुछ कहे बगैर टिंचरकी शीशी खोजने लगा। सारी शीशियोंको इधरसे उधर कर दिया, पर कहीं टिंचरकी शीशी न मिली। और दिन ढेर सारे पुराने कपड़े मिल जाते थे, पर आज लाख खोजनेपर एक चिथड़ा भी नहीं मिल रहा था। मैंने नन्हीसे ही पूछा—'नन्ही, टिंचर की शीशी कहां है?'

'उस दिन तुमने ही तो रखी थी।'

'कहां?'

'अलमारीमें,'—इतना कहकर नन्हीने शीशी दिखा दी। पर उसमें टिंचर नहीं था, क्योंकि पिछले दिन मैंने ही शीशी खोलकर छोड़ दी थी और सारा टिंचर बिखर गया था। मुझे अपनी इस लापरवाहीपर बेहद रंज हुआ। चुपचाप नन्हीकी अंगुलीपर भीगे कपड़े की पट्टी बांध दी। अब मैंने उससे पूछा—'नन्ही, यह कैसे हुआ?'

उसने कहा—'मुझे भूख लग रही थी। तुम आ नहीं रहे थे। तो मैंने सोचा कि तब तक ब्रेड काटकर खा लेती हूं। खाना तुम्हारे साथ खा लूंगी। ब्रेड काटने लगी, तो अंगुली कट गई।'

नन्हीकी इस बातसे मेरे मनमें एक झटका और लगा। मैं कितना असावधान हो गया था! आज नन्हीकी पूरी जिम्मेदारी मुझपर थी। मेरे कारण ही नन्हीको कष्ट उठाना पड़ा। अपनी ही नादानीपर मेरा मन अपनेको ही कोसने लगा। माता-पिता, शिक्षक, दीदी और भैयाकी बातें याद आने लगीं। माताजीकी 'स्वावलंबी बनने की बात', पिताजीकी 'निश्चित समयपर काम करनेकी बात' और शिक्षककी 'ध्यानसे पढ़नेकी बात'। एक समय था जब ये बातें महज उपदेश लगती थीं, पर आज एक दिनकी ही जिम्मेदारी ने इसे गलत साबित कर दिया। जिनके कंधोंपर बच्चोंको एक सभ्य नागरिक बनानेका भार होता है, वही इस जिम्मेदारीकी महानताको महसूस कर सकते हैं। आज एक छोटी-सी जिम्मेदारीने मुझे यह महसूस करा दिया। और बड़े प्यारसे मैंने नन्हीसे कहा—'नन्ही, मुझे माफ करना। यह सब मेरी गलतीके कारण हुआ है। नन्ही, अबसे किसीको शिकायत करनेका मैं मौका ही नहीं दूंगा। उनकी बातोंका अर्थ आज मालूम हो गया। फिर दुबारा ऐसी भूल नहीं होगी।'

और नन्ही हौले हौले मुस्करा उठी। अब जब सभी घर लौटने वाले थे, तो हम दोनों मुस्कराते हुए खाना खा रहे थे। ●



विज्ञान का जादूगर
एडिसन

बच्चो, रात होनेको आती है और तुम खेलके मैदानोंसे घर लौट आते हो। आते ही सबसे पहले तुम अपने कमरेका स्विच दबाते हो और तुम्हारा कमरा रोशनीसे जगमगाने लगता है। गरमीकी लंबी दोपहरीकी क्या बात, झुलसाने वाली लूओं और आंधियोंवाले गर्म दिनोंसे क्या लेना-देना, तुम तो इन सबसे बेखबर अपने या किसी दोस्तके यहां ग्रामोफोनके करीब लेटे संगीतका मजा ले रहे होते हो। इसी बीच कभी कभी तुम्हारे टेलीफोनकी घंटी भी टनटना उठती होगी जिसके दूसरी तरफ तुम्हारा कोई दोस्त, तुम्हें आज शाम सिनेमा देखनेके लिए आमंत्रित कर रहा होता है, और फिर उस शाम तुम परदेपर नाचती-गाती तस्वीरें देखनेमें मगन हो जाते हो। बिजलीकी रोशनी, ग्रामोफोन, टेलीफोन और सिनेमा—यह सब वस्तुएं आज हमारे दैनिक जीवनमें इस कदर समा गई हैं कि अब इनके बिना अपने सामान्य जीवनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। नन्हे-मुन्नो, तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुम्हारे धरतीपर आनेके पूर्व ही वे सब वस्तुएं तुम्हारे लिए उपलब्ध हो चुकी हैं, जिनकी कल्पना कुछ समय पहले तक सिर्फ जादूके खेलोंमें या परी-कथाओंमें ही संभव थी।

लेकिन, बच्चो, तुमने कभी सोचा है कि ये वस्तुएं हमें कैसे उपलब्ध हो सकीं? वह कौन व्यक्ति था जिसने अपने अद्वितीय साहस, श्रम और कौशलके जरिए हमारे लिए इन जादुई चीजोंको प्रस्तुत किया? तुममेंसे बहुतसे लोग नहीं जानते कि उस महान व्यक्तिका नाम था—टामस एल्वा एडिसन। इस महान वैज्ञानिक तथा आविष्कारकने हमारे लाभके लिए जितने आविष्कार किए उतने अन्य कोई व्यक्ति आज तक नहीं कर सका।

एडिसनका जन्म सन् १८४७ में अमरीकामें हुआ था। बचपनसे ही एडिसन जिज्ञासु स्वभावके थे। प्रकृतिकी क्रियाओंके बारेमें उनके मनमें बड़ी जिज्ञासाएं उठा करती थीं। एक बार तो कड़ाकेकी सर्दीमें बालक एडिसन दस घंटों तक निश्चल बैठे बत्तखके घोंसलेको निहारते पाए गए। वह सिर्फ यही देखनेके लिए आतुर थे कि अंडोंमेंसे बच्चे कैसे निकलते हैं। दस वर्षकी अवस्थामें वह स्कूल भेजे गए किंतु स्कूली पढ़ाईमें एडिसनका मन न लगा। हैरान हो एडिसनकी शिक्षिकाने उनकी मांको बुलाकर कहा, "कृपया एडिसनको वापस ले जाइए, इसका पढ़ पाना असंभव है।"

एडिसन स्कूलसे मुक्त हो गए और घरपर ही अपनी मांसे पढ़ने लगे। मांने एडिसनके मनमें विज्ञानके प्रति आकर्षण पैदा किया। यह आकर्षण



• सत्यशील पाण्डेय

एडिसनके मनमें इतना बढ़ा कि घरपर ही उन्होंने छोटी-सी प्रयोगशाला बना डाली। बारह वर्षकी आयु तक पहुंचते पहुंचते एडिसनने अनेक विज्ञान-की पुस्तकोंका अध्ययन कर डाला। धीरे धीरे एडिसनकी प्रयोगशालाका विस्तार होता गया। प्रयोगशालाकी बढ़ती हुई जरूरतें पूरी करनेके लिए धनकी आवश्यकता पड़ी, इसलिए एडिसन ने ट्रेनमें आइसक्रीम तथा अखबार बेचना शुरू किया। उस रेलमार्गपर थोड़े ही समयमें एडिसन-के अखबार सबसे ज्यादा बिकने लगे। खाली समयका सदुपयोग करनेके लिए एडिसनने माल-के डिब्बेमें ही एक छोटी-सी प्रयोगशाला बना ली थी। अवकाशके समय वहीं प्रयोग किया करते। किंतु एक दिन दुर्घटनावश गाड़ीके धक्कोंसे किसी ज्वलनशील पदार्थकी एक बोतल फर्शपर गिर पड़ी और फौरन अखबारके बंडलोंमें आग लग गई। किसी प्रकार आग तो बुझा दी गई, किंतु अगले ही स्टेशनपर एडिसनको धक्के देकर उतार दिया गया।

अखबार बेचते समय एक बार एडिसनने रेल-मार्गके एक स्टेशनके स्टेशन मास्टरके तीन वर्षीय पुत्रको दब मरनेसे बचाया था। उसीकी वजहसे उस स्टेशन मास्टरने निराश्रित एडिसनको अपने यहां आश्रय दिया और तार भेजनेकी क्रिया सिखाई। एडिसनने अति शीघ्र इस कार्यमें निपुणता प्राप्त कर ली। और एक स्टेशनपर वह 'तार बाबू' नियुक्त कर दिए गए।

यहीं पर काम करते करते वह तार-यंत्रोंके सुधारमें लगे रहे और उन्होंने एक ऐसे तार-यंत्र-का आविष्कार किया जिससे एक समयमें दो संदेश साथ साथ भेजे जा सकें। इसी आविष्कार के ऊपर एडिसनने अपनी समस्त पूंजी व्यय कर दी, किंतु दुर्भाग्यवश प्रथम प्रयोगमें एडिसन असफल रहे। पर्याप्त धन न होनेके कारण एडि-सन अपनी प्रणालीको अपने नामसे पेटेंट भी न करा सके और उनकी परिस्थितियोंका लाभ उठाते हुए एक दूसरे वैज्ञानिकने उनकी प्रणाली-को अपने नामसे पेटेंट करा लिया। निराशा और गरीबीसे घिरे नवयुवक एडिसन को, जो अभी सिर्फ २२ वर्षके थे, इस बातसे बेहद दुःख हुआ। अब उन्होंने अपना भाग्य अजमानेके लिए न्यूयार्क जानेका निश्चय किया।

जिस वक्त एडिसन बोस्टनसे न्यूयार्क पहुंचे, उनकी जेबें बिलकुल खाली थीं। निराश्रित एडिसनने अपरिचित शहरमें काम की तलाशमें चक्कर लगाने शुरू किए। दो दिन बीत गए। मैले कपड़े, बढ़ी हुई दाढ़ी और भूख—एडिसनके हाल बेहाल हो रहे थे कि तीसरे दिन एक असा-धारण घटना घटी।

बच्चो, तुमको यह तो पता होगा ही कि न्यूयार्क अमरीकाका सबसे बड़ा व्यापारिक शहर तथा बंदरगाह है। न्यूयार्कके बाजार-भाव सारे अमरीकाके बाजारोंपर प्रभाव रखते हैं। उस समय फोन आदिकी इतनी सुविधाएं नहीं थीं। न्यूयार्कका एक बड़ा दफ्तर तारकी मशीन द्वारा अमेरिकाके अन्य नगरोंको न्यूयार्कके बाजार-भाव-के बारेमें सूचनाएं प्रेषित किया करता था। उस दिन सवेरे उस मशीनमें अचानक खराबी आ गई और दफ्तरसे सूचनाएं जाना बंद हो गया। मशीनका संचालक मशीनको ठीक नहीं कर पा रहा था। उधर सूचनाओंके अभावमें न्यूयार्क तथा अमरीकाके सैकड़ों व्यापारिक प्रतिष्ठानोंका काम रुका पड़ा था।

इधर दफ्तरमें बेचैन व्यापारियोंकी भीड़

जमा होती गई। संयोगसे कामकी तलाशमें एडिसन उधरसे जा निकले और भीड़में शामिल हो मशीनको तांकने-झांकने लगे। थोड़ी देर बाद एडिसनने मशीनकी खराबी बता दी। किंतु एडिसन मैले कपड़ोंमें तथा बिखरे बालोंमें भिखारी जैसे लग रहे थे। उनकी खराब सूरत देखकर भीड़ने एडिसनका मजाक बनाना शुरू किया। किंतु एडिसनकी विश्वास-भरी आवाजने मैनेजरको प्रभावित कर दिया। मैनेजरने एडिसनको मशीन ठीक करनेकी इजाजत दे दी। दो घंटेके भीतर मशीन पुनः सूचनाएं भेजने योग्य हो गई और उसी वक्त उसी दफ्तरमें १५०० रुपये मासिक वेतनपर एडिसनको 'यांत्रिक निरीक्षक' के पद पर नियुक्त कर लिया गया।

कुछ दिनों बाद एडिसनने अपना एक अलग छोटा-सा कारखाना स्थापित किया और वहां विभिन्न प्रकारकी मशीनोंपर अनुसंधान करने लगे। यहीं पर एडिसनने समाचार भेजनेकी मशीनोंमें कुछ सुधार किए। उनकी एक सुधरी हुई मशीनको न्यूयार्कके एक बड़े व्यापारीने खरीदनेका प्रस्ताव रखा तथा एडिसनसे कीमत मांगनेको कहा। एडिसन मनमें सोच ही रहे थे कि वह बीस हजार मांगें कि तीस हजार, तब तक उस व्यापारीने दो लाख रुपये तक देनेका प्रस्ताव रख दिया। एडिसन जब न्यूयार्क आए थे तब जेबमें एक पैसा नहीं था और इस वक्त एडिसनके पास दो लाख रुपये मौजूद थे। अब एडिसनने मेनलो पार्क नामक जगहमें अपनी एक प्रयोगशाला स्थापित की। एडिसनके अगले प्रमुख आविष्कार यहीं हुए।

अब तक ग्राहम बेल टेलीफोनका आविष्कार कर चुके थे। किंतु उनके टेलीफोनमें कई कमियां थीं, जिससे अभी तक टेलीफोन व्यावहारिक रूपमें लोकप्रिय नहीं हो पाया था। अतः अमरीकाकी एक बड़ी कंपनीने एडिसनसे इस बातका अनुरोध किया कि वह टेलीफोनपर अनुसंधान करें। एडिसन दो-तीन साल तक टेलीफोनके ऊपर प्रयोग करते रहे और अंतमें उसको आजका सुधरा हुआ रूप देनेमें सफल हो गए। बच्चो, ग्राहम बेलने टेलीफोनका आविष्कार तो किया, किंतु वह एडिसन ही थे जिन्होंने टेलीफोनको कुछ सुनने-बोलनेके काबिल बनाया। इसी बीच उन्होंने माइक्रोफोनका भी आविष्कार किया।

एडिसनने तीस सालकी उम्रमें अर्थात् सन् १८७७ में ग्रामोफोनका आविष्कार किया। ग्रामोफोनके आविष्कारकी भी एक कहानी है। उन दिनों एडिसन स्वचालित तार-मशीनके प्रयोगमें लगे थे। विशेष प्रकारके मोमिया कागज पर आने वाले संदेश स्वयं दर्ज हो जाएं, इस बारेमें प्रयोग चल रहा था। इस यंत्रमें एक सुई लगी थी जो उस मोमिया कागजपर संदेश दर्ज करती थी। अचानक सुईसे छूता हुआ मोमिया कागजका चक्का तेज गतिसे घूम गया। इस क्रियामें एडिसनने एक विशेष प्रकारकी लयबद्ध आवाज महसूस की। एडिसनने पुनः तेज गतिसे कागजको घुमाया, इस बार उन्होंने सुईके साथ फोनका सुनने वाला परदा लगा दिया था। इस बार पहले से भी ज्यादा साफ ध्वनि निकली। एडिसनके अति चेतन मस्तिष्कमें एक विचार कौंध गया और उस सारी रात एडिसन अपनी नई मशीनके ऊपर चित्र बनानेमें लगे रहे। सवेरे उन्होंने अपने एक कर्मचारीको बुलाकर उस चित्रके अनुसार एक यंत्र बनानेको कहा। वह यंत्र क्या था—एक गोल लंबा लकड़ीका बेलन था जिसके एक सिरेपर उसको घुमानेके लिए एक हैंडिल था, दूसरे सिरेपर फोनके सुनने वाले परदेके साथ जुड़ी हुई सुई बेलनको छू रही थी। इसीके साथ साथ जब एडिसनने यह घोषणा की कि यह मशीन मनुष्योंकी तरह गाएगी, तो उनकी प्रयोगशालाके समस्त कर्मचारी आश्चर्यमें पड़ गए किंतु उनके मनमें अविश्वास नहीं हुआ, क्योंकि वे जानते थे कि एडिसनकी कल्पनाएं व्यर्थ नहीं जातीं।

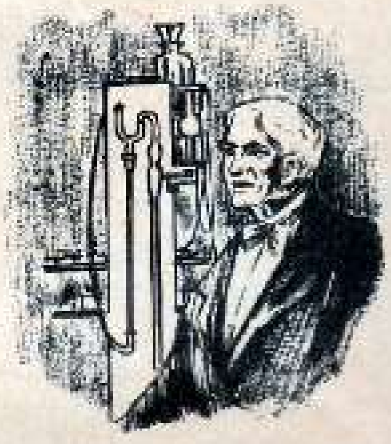
अब मशीनके परीक्षणकी बारी थी। एडिसनने अपने तमाम सहयोगियोंको बुलाया। उनके देखते देखते एडिसनने एक मोमिया कागज निकाला और बेलनके ऊपर लगा दिया और उसका हैंडिल घुमाना शुरू किया। दुनियाका पहला ग्रामोफोन तथा रिकार्ड एडिसनकी प्रयोगशालामें बज रहा था। एडिसनके सहयोगी सांस रोके सुन रहे थे और आवाज आ रही थी :

'मेरी हैड ए लिटिल लैंब. . .'

एडिसनके कमरेमें दुनियाके पहले ग्रामोफोनकी आवाज गूंज रही थी और दूसरे दिन एडिसनका नाम सभी समाचार पत्रोंमें छाया हुआ था।

इसके बाद एडिसनने सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग तथा आविष्कार किया। वह था आधुनिक प्रकार-

के बिजलीके बल्बोंका तथा उनमें विद्युतधारा प्रवाहित करनेके नये तरीकेका। बल्बोंके निर्माण में एडिसनने बहुत मेहनत की तथा लाखों रुपये व्यय किए। १८८२ में एडिसनने पहली बार लाखों व्यक्तियोंके समक्ष न्यूयार्क शहरके एक भागको विद्युत बत्तियोंसे आलोकित किया। उसके बाद एडिसनने घरोंको प्रकाशित करनेका काम पूरा किया। एडिसनने विद्युत-धाराको प्रवाहित करनेका जो नया तरीका निकाला, वह इलैक्टिकल इंजीनियरिंगके क्षेत्रमें उनकी महान देन रही। तत्पश्चात् एडिसनने बिजलीसे चलने वाली रेलगाड़ीका प्रदर्शन किया तथा बिजलीसे चलने वाली सिलाईकी मशीन, लिफ्ट आदिके आविष्कार किए।



एडिसन प्रयोगशालामें

१८८७ में एडिसनने सिनेमाकी मशीन (प्रोजेक्टर) का आविष्कार किया। १८८९ में एडिसनने पहली बार सिनेमाकी मशीनके साथ साथ ग्रामोफोनका प्रयोग कर बोलती फिल्मोंका प्रदर्शन किया। सार्वजनिक रूपमें सिनेमाके प्रदर्शन के लिए एडिसनने अपना एक सिनेमा घर भी खोला। आजकल तुम जिस सिनेमाको देख देख प्रसन्न होते हो, यह एडिसनकी ही देन है।

१९२४ में एडिसनकी प्रयोगशालामें भीषण आग लग गई और आगमें जलकर प्रयोगशाला नष्ट हो गई। करीब तीन करोड़ रुपयोंकी हानि का अनुमान लगाया गया। आग लगनेसे एडिसन के कुछ नए आविष्कार तथा उनसे संबंधित कागज भी नष्ट हो गए। किंतु ६७ सालकी उमर होनेपर भी एडिसन इस विपत्तिसे घबराए नहीं और प्रयोगशालाके पुनः निर्माणमें जुट गए।

७५ सालकी आयु तक पहुंचते पहुंचते एडिसन द्वारा किए गए आविष्कारोंकी संख्या एक हजार से ऊपर पहुंच गई थी। इस उम्रमें भी वह प्रति दिन सोलह घंटे काम करते थे। ८० वर्षकी उम्र हो जानेपर भी वह कहा करते थे कि—अब भी मनमें कई कल्पनाएं हैं जिन्हें साकार करना है।

८४ वर्षकी आयुमें, १८ अक्तूबर १९३१ को विश्वके इस महानतम वैज्ञानिककी मृत्यु हो गई। इनकी शवयात्रामें अमरीकाके तत्कालीन राष्ट्रपति हूवरने भाग लिया और राष्ट्रपतिके आदेशानुसार, एडिसनके सम्मानमें, सारे अमरीकामें पूरे एक मिनिटके लिए सभी बिजली की बत्तियां बुझा दी गई—यह वही प्रकाश था जिसे ५२ वर्ष पहिले एडिसनने प्रकाशित किया था। अपने पिताकी मृत्युपर उन बत्तियोंकी यही सर्वोत्तम श्रद्धांजलि थी।

तो, बच्चो, यह कहानी थी टामस एल्वा एडिसनकी—एक व्यक्तिमें ज्ञान, साहस और कौशल के अद्‌भुत सम्मिश्रण की, जो विज्ञान-गगनमें सूर्यकी तरह चमक रहा है और बिजलीकी इन असंख्य बत्तियोंके रूपमें संसारके कोने कोनेमें छाया हुआ है। ●

काकू के कपड़े (पृष्ठ १३ से आगे)

तेज दौड़ी। यहां तक कि थककर चूर हो गई और आखिर में हांफकर एक जगह बैठ गई। उसने अगले दिन मनमें सोचा : 'हाय, मेरी तो जान बच गई। सैकड़ों आदमियोंने काकू किसानके घरसे मेरा पीछा किया, पर मैंने सबको पीछे छोड़ दिया। खैर, अब मैं कभी काकू किसानकी मोटी मुर्गी खाने वहां नहीं जाऊंगी।'

लोमड़ी वास्तवमें फिर कभी काकू किसान के घर नहीं आई। मोटा कुत्ता यह समझता रहा कि लोमड़ी उसकी भयानक आवाजसे डरकर भाग गई और काकू किसान यह सोचता कि लोमड़ी उसकी लाठी देखकर डर गई। पर, लीलाको इस बातका अब तक पता नहीं कि लोमड़ी जिन सैकड़ों आदमियोंसे डरकर भागी थी, वे आदमी नहीं, बल्कि धुले हुए इन कपड़ोंकी परछाइयां थीं, जो लीलाने धोकर घरसे बाहर रस्सीपर फैला रखे थे। ●

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई अंकोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे उनकी जबान पर चढ़ जाती है।

बहादुर!



चलो हमारे साथ,
तीर तलवार उठाओ;
इंच इंच धरती से
दुश्मन मार भगाओ।

कहां धरी बंदूक?
उठाकर फौरन लाओ!
अरे, बाप रे...बिल्ली!
अम्मा, जल्दी आओ!

—सुधाकर दीक्षित



कुत्ता और थानेदार

फोन उठाकर कुत्ता बोला,
"सुनिए, थानेदार!
घर में चोर घुसे हैं, बाहर
सोया पहरेदार!

घरवाले सब डर के मारे
पड़े हुए चुपचाप;
मुझको भी अब डर लगता है,
आएं जल्दी आप!"

—विष्णुकांत पांडेय

मोटे लाला

मोटे लाला, पिलपिले,
धम्म कुएं में गिर पड़े!
रस्सी पट से टूट गई,
लुटिया झट से छूट गई!

गोते गपगप खाते हैं,
हाय, हाय, चिल्लाते हैं!
अब के राम बचाएंगे,
सीधे मंदिर जाएंगे!

कान पकड़ उठक-बैठक,
दिल करता है धक धक धक!
काम करें सच्चाई का,
छोड़ें साथ बुराई का!



श्रम-गीत



गाड़ी का पहिया —
चूं-चूं-चूं!
जोर लगाओ—
हूं—हूं—हूं!
आगे रस्ता बहुत पड़ा,
चल, घोड़े, किस लिए खड़ा?
सिर पर बादल छाए हैं,
बहुत अंधेरा लाए हैं।
छम छम छम गर बरस पड़े,
रह जाओगे खड़े खड़े!
दौड़ लगाओ, भागो जी,
बहुत सो लिए, जागो जी!
गाड़ी का पहिया—
चूं-चूं-चूं!
जोर लगाओ—
हूं—हूं—हूं!

—धीरेंद्र काश्यप

छोटे चित्रकार... (पृष्ठ ४४ से आगे)

के बच्चोंने अपने चित्र भेजे थे। एक लाख लोगोंने इस प्रदर्शनीको देखा था। अनिलाने यह चित्र दो वर्ष पूर्व भेजा था, जब वह १० वर्षकी थी।

बारह वर्षकी अनिलाने अपनी इस कृतिसे विश्वमें भारतके बच्चोंका गौरव बढ़ाया है। इसके लिए निस्संदेह वह बधाईकी पात्र है। लेकिन अनिलामें कहीं भी गर्वका नाम-निशान तक नहीं है। पुरस्कार प्राप्त करनेका इस बालिकाके लिए यह पहला अवसर नहीं था, इसके पूर्व भी यह लगभग ६ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। यह सिलसिला तबसे जारी है जब यह बालिका केवल पांच वर्षकी थी। १९६० में शंकरकी तत्काल चित्र प्रतियोगितामें उसे प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके बाद उसे १९६२ तथा १९६३ में पुनः शंकर पुरस्कार प्राप्त हुए। टोकियोकी अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनीमें भी उसके चित्र भेजे गए।

अनिलाकी प्रतिभा चित्रकलाके क्षेत्रमें ही सीमित नहीं, बल्कि कत्थक नृत्यमें भी उसको समान अधिकार प्राप्त है। इतनी-सी आयुमें दिल्लीके गुणी दर्शकोंके सामने वह चार-पांच बार अपने नृत्यका प्रदर्शन कर चुकी है। एक समारोहमें तबला-वादनमें भी भाग ले चुकी है। अनिलाके इस कला-प्रेमने उसकी पढ़ाईपर जरा भी प्रभाव नहीं डाला। अनिला न केवल अपनी कक्षामें प्रथम रहती है अपितु उसने माडल स्कूल, दिल्लीकी छात्रवृत्ति भी प्राप्त की है।

खाली समयमें वह कविता बनाती है या फिर टिकट अथवा सिक्के जमा करती है। स्कूलमें तैराकी और घुड़सवारी भी सीख रही है।

अभी हाल हीमें उसे 'सोवियत भूमि' पत्रिकासे बाल कलाकार पुरस्कार मिला है जिसके अंतर्गत वह मईमें सोवियत भूमिकी यात्रा करेगी।

—पुष्पा शाह

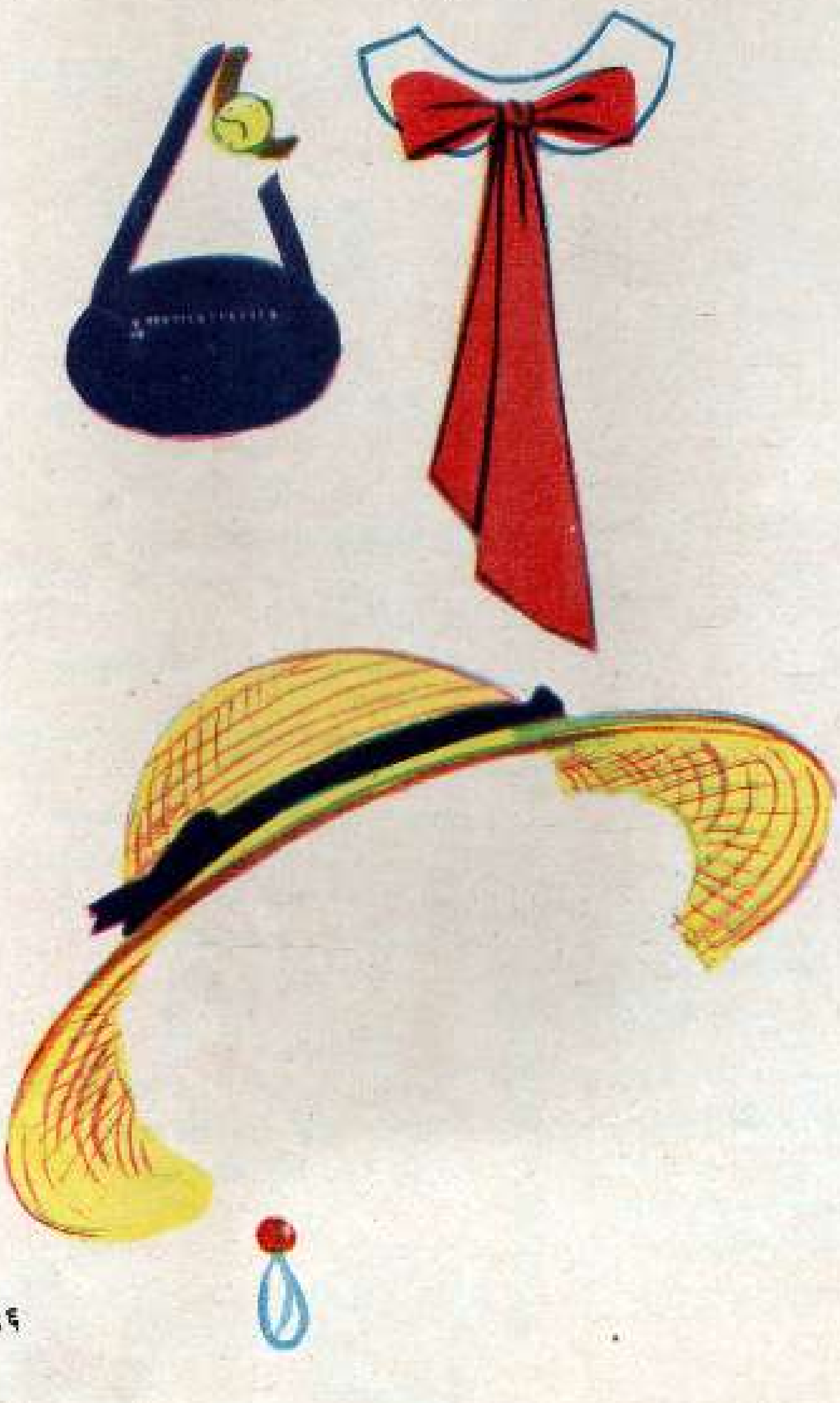
पृष्ठ २७ की चित्र-पहेलियोंके उत्तर

१—जलती हुई मोमबत्ती की लौ; २—हरी मिर्च का डंठल; ३—आदमी की नाक के छिद्र और ४—बिजली के बल्ब का निचला भाग।

सिंगार की शौकीन

• अरुणकुमार

बच्चो, तुम्हें एक कहावत मालूम है?: 'गंवार को दिया पान, लगा रोटीसे खान!' सामने के पृष्ठपर जो लड़की है, वह शौकीन तो बहुत है, लेकिन इसे आता-जाता कुछ नहीं। इसके पास बहुतसे आभूषण–घड़ी, बैग, टोपी, इयरिंग, कालर-टाई आदि हैं, पर इसे यह नहीं मालूम कि इन्हें पहना कैसे जाता है। क्या तुम इसकी सहायता कर सकते हो? अच्छा, तो इस तरह करो :



सामनेके पृष्ठपर दी हुई लड़कीको एक गत्ते-पर चिपका लो। इसे बाहरी रेखाओंपर काटो या न काटो यह तुम्हारी मरजी। चिपकानेके बाद किताबोंके बीचमें दबा कर सीधाका सीधा ही गत्तेको सुखा लो। सारी रात सूखनेके बाद निकाल लो।

अब इस पृष्ठपर दिए हुए टोपी और इयरिंग, घड़ी और बैग, कालर-टाई आदि सफाईके साथ काट लो। इन्हें कहीं चिपकानेकी जरूरत नहीं है। बस, करना केवल इतना है कि साइकिल का पंक्चर जोड़ने वाला रबड़का सोल्यूशन लो। बाजारसे इसकी छोटी-सी ट्यूब मिल जाएगी। इस सोल्यूशनको टोपी, आभूषण आदिके पीछे लगा कर, तसवीरपर जहां जहां उनकी जगह है वहां वहां चिपका दो। फिर अपनी अम्माजीको



दिखाओ कि तुमने इस लड़कीका सिंगार ठीक ठीक किया है या नहीं। जब चाहो तुम इन चीजोंको तसवीर परसे उतार सकते हो और एक सादे कागजपर हौलेसे चिपकाकर सुरक्षित रख सकते हो। तसवीरपर सोल्यशनके जो निशान रह गए हों, उन्हें उंगली रगड़कर छुड़ा दो।

तुम इससे अपने छोटे भाई-बहनोंकी परीक्षा भी ले सकते हो। उन्हें यह भी बता देना कि तुम्हारे प्रिय 'पराग' ने तुम्हें यह खेल दिया है। अगले मास की प्रतीक्षा करो—सब्रका फल मीठा!


सभी अवसरों
के लिए
बिस्कुट
शालीमार
बिस्कुट
शालीमार बिस्कुट्स प्रा. लि.
सन मिल रोड, बम्बई - १३
Telstar - SB - 30

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-४६

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० फरवरी तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्रकी पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियोंको एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर' ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचेवाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजनेका पता: संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४६), पो. बा. नं. २१३, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

यहां से काटो



यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

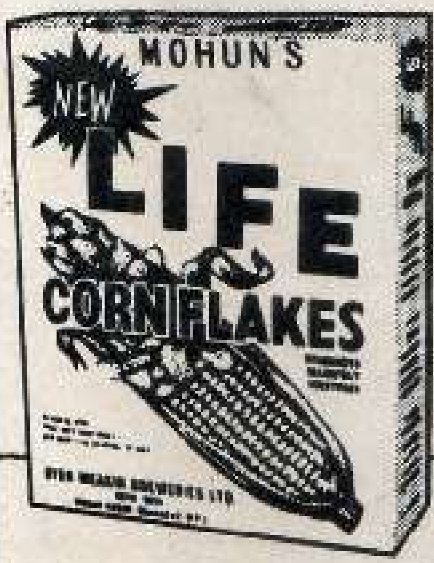
'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-४६

नाम और उम्र --

पूरा पता --

यहां से काटो

अब तक ......
नाश्ते के लिये ऐसा आहार उपलब्ध नहीं था



मोहन्ज
न्यू
लाइफ
कार्न फ़्लेक्स



मोहन्ज
व्हाइट ओट्स



मोहन्ज
न्यू
लाइफ
व्हीट फ़्लेक्स



मोहन्ज
पर्ल बार्ले

११० वर्ष से अधिक का अनुभव विश्वास की गारन्टी है

डायर मीकिन ब्रुअरीज़ लि० स्थापित १८५५

मोहन नगर, (गाज़ियाबाद) यू० पी०

सोलन ब्रुअरी — लखनऊ डिस्टिलरी — कसौली डिस्टिलरी

DMB-NP-759

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४३ का परिणाम



'पराग' की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४३ में जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार-विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **कुमारी कमलकिशोरी ओमर, द्वारा श्री घनीराम ओमर, ४७/३७ हटिया, कानपुर–१ (उ. प्र.)।**
- **कुमारी मीना, ५२४ बी सिविल लाइन्स, इलाहाबाद (उ. प्र.)।**
- **प्रदीप्तकुमार महान्ति, जगन्नाथ भवन, रामचण्डी साही, पोस्ट पुरी (उड़ीसा)।**

पहला चित्र है कुमारी कमलकिशोरी ओमरका। इसमें उसने मूल चित्रकी पृष्ठभूमिका चित्रण पूरी तरह अपनी कल्पनासे किया है। नाला और उसका पुल, पुलपर से गुजरते टैंक और दूर आकाशमें उड़ते हवाई जहाज उसने खुद बनाए हैं। पुलको उड़ा देनेकी कोशिशमें लगे घुसपैठियेके चेहरेकी भावभंगिमाको भी प्रतियोगीने अच्छा उभारा है। रंगोंका चुनाव भी वातावरणके अनुकूल है।

दूसरा चित्र है कुमारी मीनाका। इसने भी मूल चित्र की पृष्ठभूमिको स्वतंत्र रूपसे चित्रित किया है। पर्वतीय तलहटीमें सैनिक छावनीकी कल्पना उसकी अपनी है जो काफी अच्छी है। रंगोंके चुनाव और बाल-सैनिकके मुंहको चित्रित करनेमें थोड़ी और सावधानी बरती जाती तो पूरा चित्र और उभर सकता था।



प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमेंसे रामगोपाल गुप्त, लखनऊ; दिलीपकुमार सक्सेना, कानपुर–९; संजीव भार्गव, कानपुर; मानीकलाल चिचीव, बारासिवनी (म. प्र.); कुमारी रंजना जोशी, अल्मोड़ा; युगल मुरारी माथुर, अजमेर; विनोदकुमार बक्शी, प्रतापगढ़ और वि. वि. गिरी, हजारीबागके प्रयास अच्छे रहे। ●

ज्ञानोदय

दाम्पत्य-विशेषांक-२

नये वर्ष का स्वागत : जनवरी १९६६

पृष्ठ १५० से अधिक : : मूल्य : १ रुपया

मुक्त चिन्तन :

एक ग्रीक प्रोषितपतिकाका आत्मकथ्य : **कुबेरनाथ राय** • कमलकी कैफियत–उसीकी जबानी : **लावण्यप्रभा राय** • तीन दिशाएं : **सुदर्शन चोपड़ा**

लेख :

दाम्पत्यग्रस्त उपन्यास : **धनंजय वर्मा** नयी काव्य-रचनामें दाम्पत्य भाव : **सियारामशरण प्रसाद**

व्यंग्य :

प्रेरणाकी खोज : चुरायी हुई डायरी : : **केशवचन्द्र वर्मा** बम्बईके पड़ोसी : **प्रेमकपूर**

प्रश्नात्मक :

क्या सती-प्रथा भारतीय है?: **पी. रामेश्वरम्** दाम्पत्यका आई. क्यू. : **रजनी पनिकर**

आर्ष-सूत्र :

विवाह एवं दाम्पत्य-मर्यादाके कुछ पुरातन सन्दर्भ : **रामप्रताप त्रिपाठी**

वेदों में दाम्पत्य : **रंगनाथन राकेश**

एकांकी

पिपासा : **विष्णु प्रभाकर**

कहानियां

कमलेश्वर : कृष्णचन्द्र : : **कमल जोशी**

परिचर्चा : हर घर एक अलग दीप : **कुन्था जैन**

थकी हुई सप्तपदी : —और सर्पगन्धाएं : **अमृता भारती**, एक कथा-दम्पत्तिके वक्तव्य : **गोकुलचन्द्र जैन**, परित्यक्ता पत्नी : **नर्मदाप्रसाद खरे**, टाल्सटायकी डायरी : **डॉ. लक्ष्मीचन्द्र**, हाट वाटर बाट्ल : **अजीत कौर**, कवि–कथन : **दिनकर सोनवलकर**, गार्हस्थ्य सूत्र : **कंटकार्जुन**

प्रमुख वितरक :
बैनेट कोलमैन
एण्ड कं. लि०,
बम्बई–१



एक प्रति : एक रुपया।
वार्षिक : दस रुपये।
त्रैवार्षिक : पच्चीस रुपये।

सम्पादक : **लक्ष्मीचन्द्र जैन, रमेश बक्षी**

...ट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस
...बई में मुद्रित और प्रकाशित तथा आनंदप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस
... बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३/१ और १३/२, गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट
लन्दन ऑफिस : ३, अल्बे मार्ले स्ट्रीट, डब्ल्यू १

REGD. No. MH 468

